सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 11 ● अंक: 229 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, गुरुवार 25 सितम्बर, 2025
मूल्य ₹ 3/-

बड़ी सावधानी और चतुराई से अपने कदम बढाइये और याद रखिये की जीवन संतुलन बनाये रखने का एक महान काम है।

-डॉ. सिअस

अजेय रहते एशिया कप के फाइनल में... 7 | बसपा : यूपी की सियासत में मजबूती... 3 | भाजपा ने शिक्षा का माहौल पूरी... 2

एनडीए सरकार के दमनात्मक रवैये से भड़के युवा

पूरे विपक्ष ने भाजपा पर किया करारा प्रहार

लद्दाख में जेन जी का गुस्सा फूटा

» हिंसा से चार की मौत, कई घायल

» भाजपा ने हिंसा के लिए कांग्रेस को बताया जिम्मेदार

» यह एक जनरेशन जेन जी की क्रांति है : वांगचुक

» छठी अनुसूची में शामिल करने और राज्य दर्जे के लिए चल रहा आंदोलन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। जिसका डर था वहीं हुआ। एनडीए सरकार की दमनात्मक रवैये के खिलाफ जेन जी में पनप रहा आक्रोश आखिर लद्दाख में भड़क ही गया। बता दें लद्दाख में छठी अनुसूची को लेकर आंदोलन हिंसक हो गया है आगजनी और गोलीबारी में चार प्रदर्शनकारियों की मौत हो गई। 80 घायल हो गए हैं। आंदोलन इतना तीव्र था कि कर्फ्यू लगाना पड़ा। तोड़फोड़ और पथराव के बीच प्रदर्शनकारियों ने भाजपा प्रदेश कार्यालय भी फूंक दिया। इसके अलावा कई वाहनों को आग के हवाले कर दिया।

कांग्रेस काउंसलर पर एफआईआर दर्ज की गई है। उधर इसको लेकर सियासत भी गरमा गई है। जहां कांग्रेस समेत विपक्ष ने इसे सरकार के खिलाफ युवाओं का आक्रोश बताया है वहीं भाजपा ने इसके पीछे कांग्रेस के लोगों का हाथ बताया। उधर नेकां ने फारूक अब्दुल्ला ने युवाओं का समर्थन किया है। हालांकि कई दिनों से अपनी मांगों को लेकर अनशन कर रहे सामजिक कार्यकर्ता वांगचुक ने भी जेन जी का आंदोलन बताया। उन्होंने युवाओं से हिंसा न करने की मांग की है। कुछ ही समय पहले इस आंदोलन की बागडोर सोनम वांगचुक ने अपने हाथ में ली थी और वे लद्दाख को पूर्ण राज्य बनाए जाने व संविधान की छठी अनुसूची में शामिल किए जाने की मांग को लेकर भूख हड़ताल पर बैठे थे।

अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ रहे हैं लद्दाख के निवासी

छठी अनुसूची में शामिल करने और राज्य दर्जे के लिए चल रहे आंदोलन में हिंसा अचानक नहीं भड़की बल्कि यह लद्दाख जैसे शांत क्षेत्र को अस्थिर करने की सुनियोजित साजिश थी। स्थानीय लोगों को इसमें बाहरी तत्वों का हाथ होने की भी आशंका है। स्थानीय लोगों के अनुसार लद्दाख जैसे संवेदनशील प्रदेश में इससे पहले इस तरह की स्थिति कभी देखने को नहीं मिली। वर्ष 2019 में एकीकृत जम्मू-कश्मीर राज्य से अलग होकर केंद्र शासित प्रदेश बन जाने के बाद से ही लद्दाख के निवासी अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ रहे हैं। इनमें स्थानीय युवाओं को सरकारी नौकरियां और रोजगार भी एक बड़ा मुद्दा है। हालांकि केंद्र सरकार की ओर से इस साल मई में डोमिसाइल नीति लाकर उनके रोजगार संबंधी मसले को हल करने का प्रयास किया गया था लेकिन लोग अलग लद्दाख लोक सेवा आयोग और लद्दाख कर्मचारी चयन आयोग की मांग कर रहे हैं। वे लद्दाखी डोमिसाइल नीति से भी संतुष्ट नहीं थे। उनका कहना था कि इसे उस रूप में नहीं दिया गया जैसा वे चाहते थे। भाषा और संस्कृति के संरक्षण के साथ ही अपनी जमीन और संसाधनों पर अपने हक की लड़ाई वे प्रमुखता से लड़ रहे थे।

कांग्रेस काउंसलर के बचाव में सोनम बोले- उनका इतना प्रभाव नहीं कि युवा सड़कों पर आ जाएं

लद्दाख के प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक जो भूख हड़ताल पर हैं, उन्होंने वीडियो जारी कर हिंसा पर दुख व्यक्त किया और शांति बनाए रखने की अपील की। उन्होंने कहा, यह युवा वर्ग का गुस्सा है, यह एक जनरेशन जेन जी की क्रांति है। उन्होंने युवाओं से अपील की कि वे इस हिंसा को रोकें क्योंकि यह आंदोलन को नुकसान पहुंचा रहा है। लद्दाख में प्रदर्शनों के पीछे कांग्रेस की संलिप्तता के भाजपा के आरोप पर वांगचुक ने कहा कि यहां कांग्रेस का इतना प्रभाव नहीं कि युवा सड़कों पर उतर आएं। पांच

हजार युवाओं का विरोध-प्रदर्शन मामूली बात नहीं और कांग्रेस में इतना असर नहीं। बता दें कि भाजपा के आईटी सेल के प्रभारी अमित मालवीय ने कांग्रेस काउंसलर फुटसोग स्टेंजिन पर लेह स्थित भाजपा कार्यालय पर हमला करने वाले प्रदर्शनकारियों को उकसाने का आरोप लगाया है। वांगचुक ने फुटसोग का बचाव करते हुए कहा कि काउंसलर ने जो अस्पताल में अमर्यादित टिप्पणी की वो गुस्से में की थी। अस्पताल में भर्ती एलएबी के दोनों सदस्य उनके गांव के थे पर उनकी इतनी पकड़ नहीं कि वे युवाओं को प्रभावित कर सकें।

भाजपा ने राहुल गांधी पर साधा निशाना

मालवीय ने एक्स पर पोस्ट कर लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि क्या राहुल गांधी इसी तरह की अशांति की कल्पना कर रहे हैं? भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने भी एक पोस्ट में उन पर आरोप लगाया। एक्स पर उन्होंने स्टेंजिन को कांग्रेस पार्टी का काउंसलर बताते हुए कहा कि वे भाजपा कार्यकर्ताओं को चुनौती देना बंद करें।

कांग्रेस नेता और काउंसलर फुटसोग स्टेंजिन त्सेपाग पर केस

कांग्रेस नेता और काउंसलर फुटसोग स्टेंजिन त्सेपाग पर भड़काऊ भाषण देने के लिए केस दर्ज किया गया है। हालात तनावपूर्ण हैं और प्रशासन ने लेह में कर्फ्यू लगा दिया है। इंटरनेट सेवा बाधित है। इस बीच, हिंसक घटना से आहत जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक ने अपना अनशन खत्म कर दिया है। सोनम वांगचुक की अगुवाई में 15 लोग 10 सितंबर से 35 दिन के धरने पर बैठे थे।

अचानक पहुंच गया युवाओं का हुजूम

एलएबी की यूथ विंग ने बुधवार को लेह बंद का एलान किया था। बुधवार सुबह रोजाना की तरह शहीदी पार्क में धरना शांतिपूर्ण शुरू हुआ लेकिन दोपहर होते-होते अचानक वहां युवाओं का हुजूम पहुंच गया। युवाओं ने वी वांट सिक्स्थ शेड्यूल के नारे लगाते हुए तोड़फोड़ शुरू कर दी। भड़के युवाओं ने भाजपा कार्यालय में आग लगा दी। भाजपा कार्यकर्ता किसी तरह अपनी जान बचाकर वहां से भागे। इसके बाद युवाओं ने वहां रखे कागजात और फर्नीचर को आग के हवाले कर दिया। उग्र युवाओं ने रास्ते में खड़े सीआरपीएफ के वाहन समेत कुछ अन्य वाहनों को भी फूंक दिया। लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद यानी एलएएचडीसी के लेह ऑफिस को भी युवाओं ने निशाना बनाया।

लोग धोखे व वादा खिलाफी से निराशा में हैं : उमर अब्दुल्ला

जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने लद्दाख में पूर्ण राज्य की मांग (स्टेटहुड)और छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर हो रही प्रदर्शनों पर अपनी चिंता और निराशा जताई। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा दिलाने का जो वादा था, वह अब तक पूरा नहीं हुआ है, जिससे वहां के लोग धोखे और निराशा का सामना कर रहे हैं। उमर अब्दुल्ला ने कहा कि लद्दाख के लोगों को तो राज्य का वादा तक नहीं मिला था, बल्कि 2019 में अनुच्छेद 370 के निरस्त होने के बाद लद्दाख ने यूनियन टेरिटरी का दर्जा पाकर जश्न मनाया था। लेकिन आज वहां के लोग खुद को धोखा महसूस कर रहे हैं और गुस्से में हैं। अब सोचिए कि हम जम्मू-कश्मीर के लोग कितना धोखा और निराशा महसूस कर रहे हैं, जबकि हमने लोकतांत्रिक, शांतिपूर्ण और जिम्मेदारी से राज्य की मांग की है। लद्दाख में हुए इन प्रदर्शनों के दौरान पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़पें हुईं, जिसमें भाजपा कार्यालय पर भी हमला किया गया। प्रदर्शनकारियों ने राज्य की मांग और छठी अनुसूची में लद्दाख को शामिल करने की मांग की है। राष्ट्रीय सम्मेलन के विधायक तानवीर सादिक ने कहा कि स्थिति के ठीक से निपटान में विफलता हुई है। उन्होंने हिंसा की निंदा करते हुए केंद्र सरकार से आग्रह किया कि वह लद्दाख के लोगों से बातचीत करे। यह ध्यान देने योग्य है कि संविधान की छठी अनुसूची के तहत असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम के आदिवासी क्षेत्रों के प्रशासन के लिए प्रावधान हैं। अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद से ही जम्मू-कश्मीर और लद्दाख दोनों के लिए राज्य की मांग जोर पकड़ रही है।

भाजपा ने शिक्षा का माहौल पूरी तरह से बिगाड़ दिया : अखिलेश

» बोले- भाजपा जाए तो स्कूल खिलखिलाए

» बीजेपी ने स्कूल बंदी का ही एक और तरीका खोजा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सपा के अध्यक्ष व यूपी के पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने एकबार फिर भाजपा सरकार पर तीखा प्रहार किया है। सपा मुखिया ने कहा भाजपा ने शिक्षा का माहौल पूरी तरह से बिगाड़ दिया है। पीडीए समाज के लोगों को शिक्षा से वंचित रखने की ये साजिशें अब और नहीं चलनेवाली। भाजपा जाए तो स्कूल खिलखिलाए!

उन्होंने कहा है जिन गाँवों में पीडीए समाज के लोग अधिक हैं और उनमें भी मल्लाह जैसे समाज जिनके बीच पीडीए की नयी चेतना का प्रसार हो रहा है, वहाँ भाजपा सरकार पीडीए पाठशाला खुलने के डर से, अब सीधे 'स्कूल बंदी' नहीं करवा पा रही है तो सत्ता-सजातीय लोगों के द्वारा 'टीचर' न भेजकर झूठी हाजिरी लगाने का दबाव प्रधानाध्यापकों पर बनवा रही है। भाजपा का ये भी स्कूल बंदी का ही एक और तरीका है। ऐसे सत्ता पोषित उच्चाधिकारियों के दुर्व्यवहार से जो अंतहीन आक्रोश उपजता है वो अंतत: हिंसक भी हो उठता है। नाइंसाफी या भ्रष्टाचार की अति की ही ये परिणति है।

माता चंद्रघंटा की पूजा का पूर्व सीएम अखिलेश ने वीडियो किया साझा

समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव तक इन दिनों माता रानी की भक्ति में लीन दिखाई दे रहे हैं। अखिलेश यादव ने माता चंद्रघंटा के भजन-आरती वाला एक वीडियो अपने एक्स अकाउंटर पर शेयर किया। इस वीडियो में मातारानी दिखाई दे रही हैं और उनकी आरती की धुन मन को मोह लेने वाली है। अखिलेश यादव के माता चंद्रघंटा देवी वाले इस वीडियो को अब तक 35 हजार के करीब लोग देख चुके हैं। कई एक्स यूजर्स ने मातारानी से अखिलेश को 2027 में यूपी का मुख्यमंत्री बनाने का आशीर्वाद मांगा।

आजम खां से मिलेंगे अखिलेश यादव

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव 8 अक्टूबर को पूर्व कैबिनेट मंत्री आजम खां से मिलने रामपुर जाएंगे। इसके अगले ही दिन लखनऊ में बसपा की रैली है। इससे आजम के बसपा में जाने के कयासों पर विराम भी लगेगा। सपा मुख्यालय ने बुधवार को सपा अध्यक्ष का कार्यक्रम जारी कर दिया कि अखिलेश यादव 8 अक्टूबर को रामपुर जाएंगे। इस तिथि का महत्व इसलिए भी है कि बसपा प्रमुख मायावती ने 9 अक्टूबर को काशीराम की पुण्यतिथि के अवसर पर बड़ी रैली करने की घोषणा की है। चर्चा फैलाई जा रही थी कि आजम खां इस रैली में शामिल होंगे। लेकिन, अखिलेश के कार्यक्रम जारी होने और आजम के बुधवार के बयान ने इन अटकलों पर एक तरह से विराम लगा दिया। यहां बता दें कि सपा नहीं चाहती कि आजम खां कुछ ऐसा बोलें, जिससे भाजपा को मतदाताओं को हिंदू और मुसलमान में बांटने का मौका मिला। साथ ही आजम खां की अहमियत को कम आकने का खतरा भी सपा नहीं ले सकती, क्योंकि अल्पसंख्यक समाज का एक वर्ग आजम खां के साथ खड़ा है। माना जा रहा है कि अखिलेश यादव रामपुर जाकर इन दोनों स्थितियों के बीच संतुलन साधने का कोई रास्ता निकालेंगे।

एक दिन मैं बेदाग हो जाऊंगा : आजम खां

» बोले- छोटी अदालत से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक मुझे इंसाफ मिलेगा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रामपुर। समाजवादी पार्टी (सपा) के वरिष्ठ नेता एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री मोहम्मद आजम खां को लगभग दो साल के बाद सीतापुर जेल से जमानत पर रिहा कर दिया गया। अपनी बेबाक बयानबाजी के लिए जाने जाने वाले आजम खान ने भी जेल से बाहर आने के बाद अपनी प्रतिक्रि या दी है।

आगे की राजनीति, मुकदमों से लेकर अखिलेश यादव संग बातचीत को लेकर आजम खान से मीडिया द्वारा सवाल किए गए। मीडिया से बात करते हुए आजम खान ने मुकदमों के साथ-साथ अखिलेश यादव और समाजवादी पार्टी से रिश्ते पर भी बात की। समाजवादी पार्टी के नेता आजम खान ने कहा कि जहां तक मुकदमों का सवाल है उन मुकदमों में अगर कोई दम होता तो मैं आज बाहर नहीं दिखता। छोटी अदालत से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक मुझे इंसाफ मिलने की उम्मीद है। एक दिन मैं बेदाग हो जाऊंगा।

'मैं बड़ा आदमी नहीं बड़ा खादिम हूं'

अखिलेश यादव का फोन आया या नहीं इस पर उन्होंने कहा कि पांच साल तक जेल में रहने से वह मोबाइल चलाना तक भूल गए हैं। उन्होंने कहा कि अब मुझे सिर्फ अपनी पत्नी का नंबर याद है। आजम खां ने कहा मैं बड़ा आदमी नहीं बड़ा खादिम (सेवक) हूं। उन्होंने यह भी कहा कि अभी तो पहले अपना इलाज करवाऊंगा। वह बड़ी पार्टी के बड़े नेता हैं। मेरे जैसे छोटे आदमी के लिए बात करेंगे तो उनका बड़प्पन है।

सफल होने के लिए सीएम भजनलाल मुझसे लें टिप्स : अशोक गहलोत

» पूर्व मुख्यमंत्री ने कानून-व्यवस्था को लेकर भी सरकार पर निशाना साधा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। राजस्थान की राजनीति में एक बार फिर सरगर्मी बढ़ने के आसार हैं। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मौजूदा प्रदेश सरकार और केंद्र सरकार दोनों पर कड़ा प्रहार किया। गहलोत ने जहां मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को कामयाब होने के सुझाव दिए, वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगामी राजस्थान दौरे को लेकर दो बड़ी मांगें भी रखीं।

गहलोत ने कहा कि भजनलाल शर्मा पहली बार मुख्यमंत्री बने हैं और वे चाहते हैं कि वे सफल हों। उन्होंने कटाक्ष भरे लहजे में कहा- मैं चाहता हूं कि उनके सलाहकार मेरे बयान लैपटॉप पर चलाकर सुनाएं, ताकि उन्हें समझ आ सके और वे आगे सफल हो पाएं। पूर्व मुख्यमंत्री ने कानून-व्यवस्था को लेकर भी सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने चित्तौड़गढ़ जिले के कपासन कांड का जिक्र करते हुए कहा कि विधायक समर्थित बजरी माफियाओं ने एक युवक की बेरहमी से पिटाई की क्योंकि उसने विधायक से किए गए वादे की याद दिलाई थी।

पूर्व सीएम ने पीएम मोदी से दो बड़ी मांगें रखीं

गहलोत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से दो बड़ी मांगें रखीं। पहली मांग- आदिवासियों की आस्था से जुड़े मानगढ़ धाम को राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया जाए। उन्होंने कहा कि जब वे मुख्यमंत्री थे तब भी मोदी मानगढ़ आए थे लेकिन घोषणा अधूरी रह गई। दूसरी मांग- कन्हैयालाल के परिजनों को न्याय सुनिश्चित करने के लिए केंद्र को स्पष्ट रोडमैप देना चाहिए।

गहलोत के अनुसार इस मामले में न तो पुलिस ने अब तक कोई ठोस कार्रवाई की और न ही पीड़ित का उचित इलाज हो रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य में अपराधियों में कानून का डर खत्म हो चुका है और सरकार अगर पुलिस प्रशासन का इकबाल कायम कर दे तो अपराधियों में भय अपने आप पैदा हो जाएगा।

मोदी सरकार ने जीएसटी के नाम पर जजिया टैक्स लगाया था : नरेश

» बोले- टैक्स लगाएंगे भी यही लोग और इसे कम करने का क्रेडिट भी यही ले रहे हैं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

शिमला। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू के प्रधान मीडिया सलाहकार नरेश चौहान ने कहा कि वर्ष 2017 में मोदी सरकार ने जीएसटी के नाम पर जजिया लगाया। टैक्स लगाएंगे भी यही लोग और इसे कम करने का क्रे डिट भी यही ले रहे हैं। कांग्रेस तो शुरू से ही इसे गब्बर सिंह टैक्स बताती रही है।

उन्होंने कहा कि भाजपा के प्रवक्ता हिमाचल प्रदेश आते हैं तो कहते हैं कि केंद्र के वसूले टैक्स का हिस्सा राज्य को भी मिलेगा। इसमें कोई एहसान वाली बात नहीं है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश को जीएसटी लगाने के बाद नुकसान हुआ है। जीएसटी प्रतिपूर्ति केवल जयराम सरकार के कार्यकाल तक ही मिलती रही। वर्तमान सरकार के कार्यकाल में यह मुआवजा बंद हो गया है। चौहान ने पूछा कि जब यह टैक्स लगाया तो किसकी सरकार थी। चौहान ने कहा कि जीएसटी के तहत केंद्र ने 55 हजार करोड़ रुपये का टैक्स लगाया। उसे भी हिमाचल में विपक्ष को बताना चाहिए कि कहां इसे खर्च किया गया। लगाने वाली भी भाजपा की ही सरकार थीं। इतना भारी टैक्स लिया। उन्होंने कहा कि टैक्स कम होने का फायदा उपभोक्ताओं को मिलना चाहिए। 2025-26 में 11690 करो? रुपये केंद्र सरकार से टैक्स के आने हैं। विपक्ष के नेता और सांसदों को हिमाचल के लिए केंद्र से विशेष पैकेज मांगना चाहिए।

भाजपा को मुख्यमंत्री की लोकप्रियता रास नहीं आ रही

नरेश चौहान ने कहा कि राज्य की कांग्रेस सरकार के खिलाफ भाजपा ने ट्रोल आर्मी बनाई है। भाजपा को मुख्यमंत्री की लोकप्रियता रास नहीं आ रही है। वह लाइव कर रहे हैं तो अब तक तो 50 लोग गालियां दे चुके हैं।

आपदाकाल में जनता की जेब पर डाका डाल रही कांग्रेस सरकार : अनुराग ठाकुर

शिमला। पूर्व केंद्रीय मंत्री और हमीरपुर लोकसभा क्षेत्र से सांसद अनुराग सिंह ठाकुर ने हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा सीमेंट के दाम बढ़ाये जाने पर रोष प्रकट करते हुए कहा कि प्रदेश की मौजूदा कांग्रेस सरकार आपदाकाल में जनता की जेब पर डाका डालने का काम कर रही है। एक दिन पूर्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जीएसटी बचत उत्सव शुरू कर जनता को राहत देने का काम किया था, जिसमें सीमेंट के भी दाम कम हुए थे लेकिन कांग्रेस ने प्रदेश में सीमेंट के दाम बढ़ाकर जनहित से खिलवाड़ करने का काम किया है। अनुराग सिंह ठाकुर ने बुधवार को जारी बयान में कहा कि हिमाचल प्रदेश में मौजूदा कांग्रेस सरकार का नैतिक पतन हो चुका है। इस सरकार को आपदा से जूझ रहे हिमाचल के हितों से कोई मतलब नहीं है बल्कि इनका ध्यान सिर्फ अपनी जेबें भरने पर है।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

अपने वादे कभी पूरा नहीं करती भाजपा : नरेश कुमार

» स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी पर रेखा सरकार को कांग्रेस ने घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता डॉ. नरेश कुमार ने स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी के मुद्दे पर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि हिरणकूदना गांव स्थित सीएम श्री स्कूल में स्पोर्ट सेंटर और ट्रैक का उद्घाटन करना केवल दिखावा है।

इसके ठीक बगल में 110 एकड़ जमीन वर्ष 1996-97 में दिल्ली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी के लिए अधिग्रहीत की गई थी लेकिन आज तक वहां विकास कार्य शुरू नहीं हुआ। डॉ. कुमार ने आरोप लगाया कि भाजपा हर चुनाव से पहले स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी बनाने का वादा करती है, मगर जमीन आज भी खाली पड़ी है। उन्होंने सीएम से सवाल किया कि स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी पर सरकार खामोश क्यों है। उन्होंने तंज कसा कि स्कूल में छोटे स्तर का स्पोर्ट सेंटर खोलना खोदा पहाड़ निकली चुहिया और ऊंट के मुंह में जीरा जैसा है। यह खेल प्रतिभाओं के साथ मजाक और जनता को गुमराह करने का तरीका है।

बसपा : यूपी की सियासत में मजबूती की तलाश

मायावती ने कोर वोट बैंक पर किया फोकस

» मुसलमानों पर भी नजर
» भाजपा व सपा का खिसकेगा जनाधार
» कांग्रेस ने भी तैयार की नई रणनीति

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ । यूपी में विधानसभा चुनाव में लगभग दो साल बचे हैं। सभी सियासी दल अपनी-अपनी रणनीति पर काम करने लगे हैं। सपा जहां पीडीए के दम पर सत्ता में वापसी करना चाहती है जो भाजपा हिंदुत्व के सहारे सत्ता की कुर्सी को बरकरार रखना चाहती है। वहीं कांग्रेस अकेले ही वैतरणी पार करने के मंसूबे बना रही है तो बसपा अपने कोर वोट बैंक को फिरसे अपने पाले में लाने की जुगत कर रही है हालांकि उसकी नजर मुसलमानों के वोट पर भी है। इसी के मद्देनजर वह हाल ही में दो साल बाद जेल से रिहा होने वाले आजम खान को भी अपने से जोड़ने की चाह रख रही हैं।

उधर छोटे दल भी अपने सियासी महत्वकांक्षा को फलीभूत करने के फिराक में लग गए हैं। पिछले तीन लोकसभा चुनावों और तीन यूपी विधानसभा चुनावों में बसपा लगातार कमजोर होती गई है। उसके परंपरागत वोट बैंक का एक छोटा हिस्सा ही उसके साथ रह गया है। बसपा के खराब प्रदर्शन से निराश दलित और अति पिछड़े मतदाताओं ने धीरे-धीरे भाजपा और सपा की ओर रुख कर लिया है। लेकिन अब बसपा खुद को मजबूत करने में जुटी हुई है। बहुजन समाज पार्टी यूपी की सियासत में एक बार फिर अपने लिए मजबूत भूमिका की तलाश में है। इसके लिए पार्टी नौ अक्टूबर को लखनऊ के कांशीराम स्मारक स्थल पर बड़ी जनसभा करने की तैयारी कर रही है। बसपा संस्थापक कांशीराम की पुण्यतिथि पर आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में लाखों लोगों के पहुंचने की संभावना है। यूपी की राजधानी में बड़ी रैली कर मायावती अपनी वापसी के मजबूत संकेत देना चाहती हैं। इसे मायावती के द्वारा 2027 के यूपी चुनाव की शंखनाद भी माना जा रहा है। बड़ा प्रश्न यह है कि मायावती की ये कोशिशें कितनी सफल होंगी? बसपा के मजबूत होने से भाजपा के समीकरणों पर क्या असर पड़ेगा? अखिलेश यादव ने जिस पीडीए समीकरण के सहारे पिछले लोकसभा चुनाव में सफलता पाई है, उन समीकरणों में नई परिस्थितियों में क्या परिवर्तन आ सकता है?

तीन यूपी विधानसभा चुनावों में बसपा लगातार कमजोर होती गई

पिछले तीन लोकसभा चुनावों और तीन यूपी विधानसभा चुनावों में बसपा लगातार कमजोर होती गई है। उसके परंपरागत वोट बैंक का एक छोटा हिस्सा ही उसके साथ रह गया है। बसपा के खराब प्रदर्शन से निराश दलित और अति पिछड़े मतदाताओं ने धीरे-धीरे भाजपा और सपा की ओर रुख कर लिया है। इन समर्थकों में एक बड़ा वर्ग आज भी ऐसा है जो दिल से बसपा से जुड़ा हुआ है, लेकिन अपना वोट खराब न करने के कारण दूसरे दलों के साथ जुड़ गया है। यदि मायावती इस वर्ग के लोगों के बीच यह भरोसा पैदा करने में सफल हो जाती हैं कि वे पूरी मजबूती के साथ वापसी करने के लिए तैयार हैं तो पहली कोशिश में ही इस वर्ग का एक हिस्सा वापस उनके साथ जुड़ सकता है।

भाजपा पर पड़ेगा असर

भाजपा सरकारों ने गैर यादव ओबीसी जातियों और गैर जाटव दलित जातियों को साधने का काम बहुत ही प्रभावशाली तरीके से किया है। भाजपा ने इनके मन में यह भाव पैदा करने में सफलता पाई है कि समाजवादी पार्टी का पूरा लाभ यादव समाज के बीच बंट जाता है, जबकि बसपा के मजबूत होने पर यही लाभ जाटव वर्ग ले जाता है और अति पिछड़े ओबीसी वर्ग और गैर जाटव दलितों को कुछ नहीं मिलता है। भाजपा ने बड़ी ही खूबसूरती से इन वर्गों को अपने पार्टी संगठन से लेकर सरकारों तक में उनकी जातिगत भागीदारी सुनिश्चित की है। इससे भाजपा की स्वीकार्यता हर वर्ग में बढ़ी है। भाजपा की सरकारों ने इन वर्गों तक विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाकर उन्हें अपने मजबूत वोट बैंक के रूप में परिवर्तित कर लिया है। यही वर्ग केंद्र के साथ-साथ विभिन्न राज्यों में बार-बार भाजपा सरकारों की वापसी का कारण बना है। लेकिन राजनीतिक प्रेक्षक मानते हैं कि अति दलित जातियों में जातीय पहचान का मुद्दा इन सभी समीकरणों पर भारी पड़ सकता है। भाजपा को मायावती के मजबूत होने से कितना नुकसान होगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि मायावती इस वर्ग के बीच अपने मजबूत होने का कितना मजबूत संदेश दे पाती हैं।

माया का तिलिस्म बिखर चुका है

सपा प्रवक्ता मो. आजम खान ने कहा कि पिछले लोकसभा चुनाव में ही अखिलेश यादव ने समाज के सभी वर्गों को टिकट देकर यह साफ कर दिया है कि उनके पीडीए में हर जाति-हर वर्ग के लोगों की भागीदारी और सम्मान सुरक्षित है। भाजपा को रोकने के लिए आज हर वर्ग सपा पर भरोसा कर रहा है, जबकि मायावती ने बार-बार यही संदेश दिया है कि वे भाजपा के लिए काम कर रही हैं। उन्होंने कहा कि अब कोई दलित-पिछड़ा मतदाता उनके साथ जाने के लिए तैयार नहीं है। दलित या मुसलमान बसपा को अपनी पार्टी के रूप में नहीं देख रहा है क्योंकि मायावती भ्रष्टाचार का प्रतीक बन चुकी हैं।

'भाजपा को कोई नुकसान नहीं'

यूपी भाजपा के प्रवक्ता राकेश त्रिपाठी ने अमर उजाला से कहा कि बसपा की लखनऊ रैली एक प्रतीकात्मक संदेश से अधिक कुछ नहीं है। दलित समुदाय का मतदाता जानता है कि मायावती अब यूपी की सियासत में बीता हुआ समय हो चुकी हैं। उन्होंने अपने कार्यकाल में केवल अपने लिए काम किया है। उन्होंने कहा कि मोदी-योगी सरकार ने जाति और संप्रदाय के नाम पर राजनीति करने वालों की राजनीति की छुट्टी कर दी है। दलित-अति पिछड़ा मतदाता अब अपने बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए भाजपा की ओर देखता है। उन्होंने कहा कि मायावती जिस राजनीति की प्रतीक हैं, उस राजनीति के दिन अब लद चुके हैं।

सपा के पीडीए समीकरण पर ज्यादा असर नही : पाल

उत्तर प्रदेश बसपा के अध्यक्ष विश्वनाथ पाल ने कहा कि अखिलेश यादव के पीडीए का अर्थ परिवार दल एलायंस था। उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव के सत्ता में रहने पर पूरी सत्ता की बंदरबांट केवल उनके अपने परिवार तक सीमित थी। यादव समाज के लोगों तक भी इसका असर बहुत सीमित रहा। किसी दूसरी जाति का पिछड़ा या दलित सपा सरकार के दरवाजे से अंदर नहीं जा पाया। उन्होंने कहा कि, जबकि निषाद, चौरसिया, राजभर और पाल जैसी दूसरी जातियों के बड़े-बड़े नेता बसपा में रहकर ही मजबूत हुए और अपनी जातियों के बड़े नेता बनकर

उभरे। विश्वनाथ पाल ने कहा कि 2012-2017 में अखिलेश यादव और 2017 के बाद भाजपा की सरकारों ने यह दिखा दिया है कि उनकी सरकारों में यूपी का आम आदमी सुरक्षित नहीं है। सपा के काल में दिनदहाड़े सामूहिक दुष्कर्म की घटनाएं घटती थीं तो आज भी केवल कुछ अपराधियों का एनकाउंटर कर हवा बनाने की कोशिश की जा रही है, जबकि असलियत में आज यूपी में अपराध चरम पर है। उन्होंने कहा कि यूपी में हर जाति के लोग आज भी मायावती के उस दौर को याद करते हैं जब अपराध पर नियंत्रण था और अफसर सही समय पर ऑफिस आ जाते थे। उन्होंने कहा कि जनता मायावती को 2027 में वापस मुख्यमंत्री के रूप में देखना चाहती है और वे इसके लिए दिन रात काम कर रहे हैं।

दलितों के सम्मान और पहचान की बात करेगी असर

बसपा दलित मतदाताओं के स्वाभिमान के तौर पर उभरी थी। दलित मतदाता बसपा को अपनी पहचान के तौर पर देखता था। वह दूसरे दलों की ओर गया है, लेकिन उसके मन में अपनी पहचान को लेकर एक छटपटाहट आज भी साफ महसूस की जा रही है। यदि मायावती और आकाश आनंद इस वर्ग में अपनी पहचान का मुद्दा फिर से जीवित कर सकें तो वह उनके साथ वापस आ सकता है और यह बसपा की वापसी का मजबूत आधार बन सकता है। यदि बसपा अपना यह कोर वोट बैंक अपने साथ वापस लाने में सफल रही तो गैर यादव अति पिछड़ा ओबीसी वर्ग भी उसके साथ वापस आ सकता है। अपने आपको मजबूत करने के लिए बसपा ब्राह्मण सम्मेलन दुबारा करने की योजना बना चुकी है। इसकी शुरुआत जल्द ही सतीश चंद्र मिश्रा के नेतृत्व में की जाएगी। इसके अलावा वह मुसलमानों, अति पिछड़ों को अपने साथ वापस लाने पर काम कर रही है।

दलित युवा अब कांग्रेस की ओर देख रहा है : विश्व विजय सिंह

यूपी कांग्रेस के उपाध्यक्ष विश्व विजय सिंह ने कहा कि बसपा के राजनीतिक उदय से पहले जाटव-गैर जाटव दलित समाज कांग्रेस का परंपरागत वोटर था। लेकिन जातीय राजनीति के बढ़ते प्रभाव के कारण इस वर्ग का एक हिस्सा मायावती और अन्य लोगों के साथ चला गया। लेकिन दलित युवाओं ने देखा कि बाबा साहब

अंबेडकर के जिस आदर्श को लेकर वे चले थे, मायावती जैसे नेताओं ने उसके साथ ही समझौता कर लिया। इससे पूरे दलित आंदोलन को गहरी चोट लगी है। विश्व विजय सिंह ने कहा कि राहुल गांधी आज हर मंच से जिस तरह संविधान और बाबा साहब अंबेडकर के आदर्शों का मुद्दा उठा रहे हैं, दलित युवा आज उन्हें अपने आदर्श के रूप में देख रहा है। वह समझ रहा है कि यदि संविधान और अंबेडकर का आदर्श कोई सुरक्षित रख सकता है तो वह कांग्रेस और राहुल गांधी ही हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी परिस्थिति में दलित अब बसपा की ओर नहीं, कांग्रेस की ओर वापसी करेगा क्योंकि मुसलमान हो या दलित, दोनों ही वर्गों को पता है कि उसके अधिकार की लड़ाई आज केवल कांग्रेस लड़ रही है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

मन व विचार से भी शुद्ध आचरण जरूरी

> “नौ दिनों तक कन्याओं का पूजन व वंदन करने वाले इसके बाद ही उनसे दुर्व्यवहार करने लगतें है। जबकि उन्हें तो पूरे वर्ष नवरात्रि के दिनों की तरह व्यवहार करन चाहिए अर्थात उन्हें मानसिक रूप से भी शुद्ध आचरण करना चाहिए। अन्यथा ऐसे पूजन का कोई अर्थ नहीं रहेगा।

देश में इस समय नवरात्रि के पूजन के कार्यक्रम चल रह हैं। ये शक्ति के अराधना के दिन हैं। ये नौ दिन हमें सिखाते हैं कि हमें नारी का सम्मान करना चाहिए। बालिकाओं व बेटियों का सशक्तिकरण करना चाहिए। पर धर्म की दुहाइ देने वाले ही इस पर ध्यान नहीं देते हैं। नौ दिनों तक कन्याओं का पूजन व वंदन करने वाले इसके बाद ही उनसे दुर्व्यवहार करने लगतें है। जबकि उन्हें तो पूरे वर्ष नवरात्रि के दिनों की तरह व्यवहार करन चाहिए अर्थात उन्हें मानसिक रूप से भी शुद्ध आचरण करना चाहिए। अन्यथा ऐसे पूजन का कोई अर्थ नहीं रहेगा। जो भी धर्म व संस्कृति को बचाने की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं उन्हें कोई पुण्य लाभ नहीं मिलेगा। शारदीय नवरात्रि आधुनिक युग में प्रासंगिक है? इसकी जड़ें वेद-पुराणों में गहराई से जुड़ी हुई हैं। यह पर्व केवल भगवती श्रीदुर्गाजी की पूजा तक सीमित नहीं, बल्कि आत्मानुशासन, आत्मबल और नारीशक्ति के सम्मान का प्रतीक होने के साथ-साथ अच्छे स्वास्थ्य के लिहाज से मानसिक शुद्धि और अनुशासित जीवनशैली की शुरुआत करने का एक बेहतरीन अवसर भी है। जहां एक ओर यह पर्व धार्मिक परंपराओं से जुड़ा है, वहीं आधुनिक युग में इसकी प्रासंगिकता कहीं अधिक व्यापक और सार्थक हो गई है।

अतएव इस पर्व को धर्म, शक्ति, भक्ति और आत्मोत्थान का महायोग कहा जा सकता है। नवरात्रि का मूल भाव शक्ति की आराधना है। यह पर्व समाज को नारी को देवी के समान देखने के साथ-साथ, उसे वास्तविक अधिकार और सम्मान देने की प्रेरणा देता है। आधुनिक जीवन तनाव, भागदौड़ और अनिश्चितता से भरा है। नवरात्रि के व्रत, ध्यान और संयम की प्रक्रिया मानसिक शांति और आंतरिक संतुलन प्रदान करती है। शरीर को डिटॉक्स करने के साथ-साथ मन को भी नकारात्मकता से मुक्त करने में सहायक होती है। नवरात्रि के व्रत, सात्विक आहार और नियमबद्ध जीवनशैली आज की खराब दिनचर्या के लिए एक प्रकार की नेचुरल थेरेपी बन सकती है। डिटॉक्स, सादगी और संयम स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं। यह पर्व तन, मन और आत्मा तीनों के लिए तरोजाज करने का मौक है। नवरात्रि के आयोजन- दुर्गा पूजा, रामलीला, गरबा- समुदाय को एक साथ लाते हैं। आज जब अकेलापन बढ़ रहा है, यह पर्व सामूहिकता और मेल-जोल का अवसर प्रदान करता है। सांस्कृतिक मेलों, भजन-संध्याओं और झांकीयों के माध्यम से सामाजिक ताने-बाने को मजबूत करता है जिससे व्यक्ति खुद को सुरक्षित और मजबूत पाता है, रिश्तों में मिठास और उच्च मनोबल से लबरेज जीवन को बढ़ावा देने का यह एक अनमोल अवसर है। नवरात्रि के पीछे की कथा- मां दुर्गा की महिषासुर पर विजय- एक प्रतीक है जीवन के संघर्षों पर विजय का।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

पंजाब को बाढ़ से बचाने को बने कारगर रणनीति

आरएन मलिक

पंजाब ने 1988 के बाद पांचवीं बार विनाशकारी बाढ़ का सामना किया है। इससे पहले, राज्य में 1993, 2008, 2019 और 2023 में विनाशकारी बाढ़ आई थी। संयोगवश, इन बाढ़ों के लिए केवल सतलुज और व्यास नदियां ही जिम्मेदार रही हैं। रावी नदी केवल इस साल ही रौद्र रही। बाढ़ का पैटर्न कमोबेश हर बार जाना-पहचाना होता है। इस साल, अगस्त के अंतिम सप्ताह या सितंबर के पहले दो सप्ताहों में सतलुज और व्यास के जलग्रहण क्षेत्रों में लगातार बारिश हुई, जबकि दोनों नदियों पर बने बांधों के जलाशय पहले ही अधिकतम भंडारण स्तर तक भर चुके थे। परिणामस्वरूप, जलाशयों को सुरक्षित और इष्टतम स्तर पर बनाए रखने के लिए स्पिल-वे से प्रचुर मात्रा में पानी छोड़ना पड़ा, जो पूरे वेग से निकला। इस निकासी के साथ-साथ, दोनों बांधों के निचले उप-पहाड़ी इलाकों से उत्पन्न भारी वर्षा जल प्रवाह ने भी दोनों नदियों को उफान पर ला दिया, जिससे राह में पड़ने वाले कमजोर तटबंध टूट गए और बड़ी संख्या में गांवों के खेत जलमग्न हो गए।

इस बार, तीनों नदियों के जलग्रहण क्षेत्रों की तुलना में उप-पहाड़ी क्षेत्रों में हुई भारी बारिश के कारण विनाशकारी बाढ़ आई और बांधों के निचले इलाकों में लाखों क्यूसेक पानी पैदा होकर प्रवाहित हुआ। उदाहरणार्थ, 7 सितंबर तक, बीबीएमबी ने केवल सीमित मात्रा में पानी छोड़ा, जो बिजली संयंत्रों को उनकी निर्धारित क्षमता पर चलाने के लिए आवश्यक था। सतलुज और ब्यास नदियों में पानी की आमद लगभग पूरी तरह से बांधों से निचले इलाके की सहायक नदियों एवं अन्य धाराओं द्वारा लाए गए प्रचुर जल-प्रवाह के कारण थी। उदाहरण के लिए, स्वां और सिरसा नामक दो बड़ी सहायक नदियों सहित अन्य 16 धाराएं हैं, जो नंगल बांध और रोपड़ हेडवर्क्स के बीच के इलाके में सतलुज में आन मिलती हैं। इन 16 धाराओं का संयुक्त प्रवाह 3.0 लाख क्यूसेक से अधिक रहा। रावी नदी के मामले में प्रवाह का पैटर्न थोड़ा अलग हो सकता है।

यहां, बीबीएमबी के विपरीत, पंजाब के सिंचाई विभाग ने रणजीत सागर जलाशय के आंतरिक प्रवाह और बाह्य प्रवाह के आंकड़े मीडिया को नहीं बताए हैं। ऐसी संभावना है कि स्पिल-वे से 600 मेगावाट बिजली संयंत्र चलाने के लिए आवश्यक मात्रा से अधिक पानी छोड़ा गया हो। ऐसा इसलिए है क्योंकि रणजीत सागर जलाशय की वर्तमान भंडारण क्षमता केवल 2.33 बिलियन क्यूबिक मीटर है, जोकि पौंग बांध जलाशय के 30 प्रतिशत और भाखड़ा जलाशय के 38 प्रतिशत जितनी है। इसके अलावा, रणजीत सागर, पौंग बांध और भाखड़ा बांध जलाशयों का क्षेत्रफल क्रमशः 52, 241 और 168 वर्ग किलोमीटर है। यह तुलना स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि जलाशय के छोटे आकार के कारण रणजीत सागर बांध विराट मात्रा में आए पानी को संभालने में असमर्थ है और स्पष्टतः अधिकतम प्रवाह को नियंत्रित नहीं कर सकता। रावी नदी से लगभग 4.0 लाख क्यूसेक अभूतपूर्व प्रवाह का यह एक और कारण हो सकता है। फिर, डलहौजी के पास रावी नदी के ऊपर की ओर, 121 मीटर ऊंचा चिमेरा बांध है और इसका कुल संग्रहण क्षेत्र लगभग 0.45 बिलियन घन मीटर (बीसीएम) है। इसी प्रकार, भाखड़ा बांध के ऊपर की ओर 167 मीटर ऊंचा कोल बांध का संग्रहण क्षेत्र 0.6 अरब घन मीटर में है। दुर्भाग्य से, इन दोनों बांधों को नदी-प्रवाह (रन ऑफ द रिवर) परियोजनाओं के रूप में डिजाइन किया गया है। अधिकतम संभव विद्युत ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए, इनके जलाशयों को वर्ष भर ऊपर तक भरा रखा जाता है। यदि इन दोनों बांधों को भी संग्रहण बांधों के रूप में डिजाइन किया गया होता, तो इनके जलाशय आपातकालीन अवधियों के दौरान बड़े आने वाले जल प्रवाह को अपने अंदर समाहित रणजीत सागर तथा भाखड़ा बांधों के स्पिल-वे पर चरम प्रवाह के बोझ को नियंत्रित करने में सहायक हो सकते थे। पंजाब के आठ

जिलों के 2000 गांवों में बाढ़ के भयावह स्तर और इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण अर्थव्यवस्था की व्यापक क्षति को देखते हुए, पंजाब और केंद्र सरकार, दोनों को निवारक उपाय करने की आवश्यकता है जिससे भविष्य में इस प्रकार की बाढ़ की स्थिति फिर कभी न बने।

ये उपाय अल्पकालिक और दीर्घकालिक, दोनों होने चाहिए, जैसा कि नीचे विस्तार से बताया गया है। अल्पकालिक उपाय के रूप में भारतीय मौसम विभाग द्वारा वर्षा के पूर्वानुमान सही निकलते पाए जाने पर, बीबीएमबी को 20 अगस्त के आसपास दोनों बांधों में जलाशय स्तर को पूर्ण जलाशय स्तर (एफआरएल) से कम-से-कम एक मीटर नीचे रखना चाहिए ताकि अगस्त के अंत और सितंबर की शुरुआत में अधिक जल प्रवाह को समायोजित किया जा सके। रणजीत सागर बांध के इंजीनियरिंग विंग भी ऐसी नीति अपनाए।

विज्ञान, आस्था और न्याय में संतुलन की तार्किकता

डॉ. सुधीर कुमार

दवा, दुआ और अदालत का संबंध मानव जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलुओं को दर्शाता है- विज्ञान, आस्था और न्याय। ये तीनों अलग-अलग लग सकते हैं, पर असल में एक-दूसरे के पूरक हैं। दवा विज्ञान और तर्क पर आधारित है, दुआ आस्था और मन की शक्ति पर, जबकि अदालत कानूनों और नियमों पर चलती है। अदालत ही वह संवैधानिक ढांचा है जो दवा और दुआ दोनों को अंधविश्वासों और गलत इस्तेमाल से बचाकर संतुलन बनाए रखती है। अदालत की मुख्य भूमिका चिकित्सा लापरवाही के मामलों में दिखती है, जहां यह सुनिश्चित करती है कि डॉक्टर ने अपना कर्तव्य सही ढंग से निभाया या नहीं। इसके लिए अदालत 'बोलम परीक्षण' जैसे सिद्धांतों का उपयोग करती है, जो यह तय करते हैं कि डॉक्टर ने उचित सावधानी बरती या नहीं।

दूसरे शब्दों में, डॉक्टर को तब तक लापरवाही का दोषी नहीं ठहराया जा सकता जब तक कि यह साबित न हो जाए कि उसने ऐसा कुछ किया जो उस समय चिकित्सा क्षेत्र में स्वीकार्य अभ्यास नहीं था। यह प्रणाली डॉक्टरों को बेवजह के मुकदमों से बचाती है और साथ ही यह भी सुनिश्चित करती है कि मरीजों के अधिकार सुरक्षित रहें और चिकित्सा मानकों का पालन हो। अदालत इन तीनों के बीच एक सेतु का काम करती है। भारत में, न्यायपालिका ने चिकित्सा देखभाल को एक संवैधानिक अधिकार के रूप में स्थापित किया है। संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत, आपातकालीन चिकित्सा देखभाल प्राप्त करना हर नागरिक का 'जीने का मौलिक अधिकार' है। इसका मतलब है कि कोई भी अस्पताल, चाहे वह सरकारी हो या निजी, किसी भी गंभीर मरीज का इलाज करने से इनकार नहीं कर सकता, भले ही उसके पास पैसे न हों। यदि कोई अस्पताल ऐसा करता है, तो इसे 'सेवा में कमी' मानते हुए उपभोक्ता न्यायालय में शिकायत की जा सकती है। इस प्रकार, अदालत केवल न्याय नहीं करती, बल्कि वह चिकित्सा देखभाल के न्यूनतम मानकों को भी स्थापित करती है।

भारतीय संविधान धार्मिक स्वतंत्रता की गारंटी देता है, लेकिन यह अधिकार असीमित नहीं है। यह सार्वजनिक व्यवस्थाएं, नैतिकता और स्वास्थ्य के अधीन है। यह सिद्धांत तब लागू होता है जब धार्मिक विश्वास जीवन को खतरे में डालते हैं। यदि कोई वयस्क धार्मिक सोच आधारित उपचार से इनकार करता है, तो यह उसकी धार्मिक स्वतंत्रता का मामला हो सकता है, लेकिन जब यह किसी नाबालिग के जीवन से जुड़ा होता है, तो अदालत का हस्तक्षेप आवश्यक हो जाता है। ऐसे मामलों में, अदालत 'जीवन के अधिकार' (आर्टिकल 21) को माता-पिता की धार्मिक स्वतंत्रता से अधिक महत्वपूर्ण मानती है, यह स्पष्ट करते हुए कि किसी भी धार्मिक विश्वास को मानव जीवन पर हावी होने की अनुमति नहीं दी जा सकती। इसी तरह, इच्छामृत्यु का मुद्दा भी धार्मिक और कानूनी दृष्टिकोणों के बीच टकराव का एक उदाहरण है। भारत में निष्क्रिय इच्छामृत्यु को कानूनी मान्यता दी गई है। धार्मिक कारण अक्सर इसे 'ईश्वर के खिलाफ जाने' समान मानते हैं। लेकिन अरुणा शानबाग मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने 'मृत्यु की प्रक्रिया में गरिमा' को 'जीवन के अधिकार' का एक हिस्सा माना।

यह फैसला दर्शाता है कि अदालत धार्मिक और दार्शनिक मान्यताओं को ध्यान में रखती है, लेकिन अंतिम निर्णय व्यक्ति के मौलिक अधिकारों और गरिमा पर आधारित होता है। सोजन बनाम केरल राज्य (2018) का मामला इस बात का एक कड़वा सबक है कि जब आस्था अंधविश्वास बन जाती है, तो वह जीवन को खतरे में डाल सकती है। एक पिता ने अपनी बेटी का मेडिकल इलाज बंद करवाकर उसका धार्मिक इलाज शुरू करवाया, जिससे उसकी मौत हो गई। अदालत ने धार्मिक विश्वास के नाम पर की गई इस लापरवाही को दंडनीय अपराध माना और पिता को सजा दी। यह मामला स्पष्ट करता है कि सच्ची आस्था कभी जीवन-विरोधी नहीं हो सकती। यदि कोई विश्वास, वैज्ञानिक प्रमाणों के खिलाफ जाकर, किसी व्यक्ति के जीवन को खतरे में डालता है, तो वह लापरवाही है, और कानून उसे दंडित करेगा। यह हमें सिखाता है कि कानून, नैतिकता और विज्ञान के मानकों से ऊपर कोई विश्वास नहीं है, और इन मानकों को बनाए रखना समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। शर्ली थॉमस बनाम केरल राज्य (2022) का मामला एक ऐतिहासिक उदाहरण है जो दवाएं, दुआ और अदालत के बीच के नाजुक संबंध को दर्शाता है।

इस मामले में, एक महिला ने अपनी लाइलाज बीमारी के कारण इच्छा मृत्यु की अनुमति मांगी थी। अदालत ने अपने फैसले में कहा कि गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार मौलिक है, लेकिन जीवन समाप्त करने का अधिकार नहीं। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि चिकित्सा विज्ञान इलाज का आधार है, जबकि आस्था और दुआएं व्यक्ति की आंतरिक शक्ति और उम्मीद का स्रोत हैं। इस फैसले ने यह स्थापित किया कि अदालत का काम केवल कानून लागू करना नहीं है, बल्कि मानवीय गरिमा को भी सुनिश्चित करना है। यह मामला दिखाता है कि जब विज्ञान की सीमाएं खत्म हो जाती हैं तो आस्था उम्मीद दे सकती है, लेकिन इन्हें एक-दूसरे का विकल्प नहीं, बल्कि एक-दूसरे का पूरक माना जाना चाहिए। दवाएं, दुआ और अदालत एक त्रिवेणी के तीन संगम हैं, जहां प्रत्येक का अपना महत्व है। दवा आधुनिक ज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रतीक है, दुआ मानव मन की आंतरिक शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है, और अदालत वह बाड़ है जो इस प्रणाली को सुरक्षित रखती है। समाज की प्रगति के लिए इन तीनों के बीच संतुलन अनिवार्य है। हमें दवा की शक्ति को स्वीकार करना चाहिए, दुआ की क्षमता को समझना चाहिए और अदालत के न्याय का सम्मान करना चाहिए।

हेयर कलर

बार-बार कराना है खतरनाक

अक्सर लोग औरों से हटकर दिखना चाहते हैं और अलग दिखने के लिए बालों को कलर करने के बारे में सोचते होंगे। बालों को कलर करने के लिए मार्किट में कई प्रकार के हेयर कलर उपलब्ध होते हैं। कुछ हेयर कलर परमानेंट, सेमी-परमानेंट होते हैं और कुछ कलर टेम्परेरी होते हैं। हालांकि, बालों को कलर करने के लिए ऐसे उत्पादों को चुनना बेहद मुश्किल है जो केमिकल मुक्त हो या आपके बालों को नुकसान न पहुंचाये। लेकिन यदि आप निश्चित अंतराल पर बालों में कलर करते हैं तो यह आपके बालों के लिए काफी खतरनाक है। दरअसल, आज के समय में हेयर कलरिंग फैशन का हिस्सा बन चुका है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि लगातार बालों में कलर करने से आपके बालों और स्कैल्प को कितना नुकसान हो सकता है? क्योंकि बार-बार हेयर कलर करने से कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और आप अपने बालों को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

बढ़ेगा हेयर फॉल

अगर आप बार-बार बिना समय अंतराल के अपने बालों में कलर कराते हैं तो हेयर फॉल बढ़ सकता है। हेयर कलर बालों को काफी नुकसान पहुंचाते हैं। इससे बालों की जड़ें कमजोर होती हैं। बालों की जड़ें कमजोर होते ही हेयर फॉल बढ़ जाता है। इसलिए थोड़ा संभल कर इसका इस्तेमाल करें। क्योंकि हेयर डाई में कई रसायन होते हैं जो बालों की प्राकृतिक नमी को खत्म कर देते हैं इससे बाल रूखे और बेजान हो जाते हैं। हेयर डाई के रसायन स्कैल्प को नुकसान पहुंचा सकते हैं। जिससे एक्जिमा या डर्माटाइटिस जैसी गंभीर समस्याएं हो सकती हैं। जिससे बालों की ग्रोथ रुक जाती है। हेयर डाई का बार-बार प्रयोग करने से बालों का प्राकृतिक रंग खो जाता है। इससे बालों का रंग असामान्य और फीका हो सकता है। बालों का बार-बार रंग बदलने से उनके टेक्सचर पर भी बुरा असर पड़ता है। बार-बार हेयर डाई लगाने में काफी समय और पैसे की भी बर्बादी होती है। हर बार हेयर डाई खरीदने और सैलून जाने में खर्चा होता है, जो लंबे समय में एक बड़ी राशि बन जाती है।

बढ़ेगी डैंड्रफ की समस्या

ज्यादा हेयर कलर के इस्तेमाल से स्कैल्प में नमी की कमी होने लगती है, जिस कारण स्कैल्प पर रूसी का जमना बेहद आम दिक्कत है। ऐसे में आपको भी उलझनों का सामना करना पड़ेगा। इसलिए कोशिश करें कि एक बार कलर कराने के बाद थोड़ा गैप दें, ताकि बालों की स्कैल्प भी साफ रह सके। इसलिए ज्यादा हेयर कलर नहीं करना चाहिए। इसके अलावा बरसात के मौसम में बालों में रूसी की समस्या अकसर परेशान करती है। यह समस्या मानसून में नमी और उमस के कारण कई बार और ज्यादा बढ़कर व्यक्ति के लिए शर्मिंदगी तक का कारण बन सकती है। वहीं अगर आप डैंड्रफ की समस्या से परेशान रहने लगते हैं तो ये घरेलू नुस्खे आपकी समस्या को दूर करने में आपकी मदद कर सकते हैं।

सिर पर बढ़ेगी खुजली

नियमित रूप से बार-बार हेयर कलर इस्तेमाल करने की वजह से स्कैल्प पर खुजली बढ़ जाती है। ये खुजली बहुत बार एलर्जी में बदलकर काफी परेशान कर देती है। इसलिए यदि आपको भी स्कैल्प पर अगर हल्की सी भी खुजली हो रही है तो तत्काल प्रभाव से हेयर कलर का इस्तेमाल बंद कर दें, वरना इस कारण आपकी दिक्कत बढ़ जाएगी।

बाल होंगे रूखे और बेजान

आजकल बाजार में कई ऐसे हेयर कलर मिलते हैं, जिनमें तमाम तरह के केमिकल पाए जाते हैं। ये केमिकल यदि बालों में ज्यादा इस्तेमाल किए गए तो इसकी वजह से बाल रूखे, बेजान और कमजोर हो जाते हैं। इसलिए यदि आप नहीं चाहते कि आपके बाल रूखे और बेजान हो जाएं तो अमोनिया वाले हेयर कलर को इस्तेमाल करने से बचें। लगातार कलर से बाल अधिक सख्त हो जाते हैं। यही नहीं इन रूखे और बेजान बालों को जितना भी पोषण दिया जाए, सब बेकार हो जाता है। वहीं इस तरह की समस्याओं का सामना ज्यादातर महिलाएं करती हैं। लंबे बाल जब रूखे और बेजान दिखने लगे तब काफी चिंता होती है। वहीं कई बार कलर आपके बालों की जड़ों को भी डैमेज कर देते हैं, जिससे हेयर फॉल शुरू हो जाता है।

हंसना मना है

पत्नी- तुम मुझे सोते हुए गाली दे रहे थे, पति- नहीं तुम्हें कोई गलतफहमी हुई है, पत्नी-क्या गलतफलमी? पति- यही कि मैं सो रहा था... तब से वाकई में पति की नींद गायब है...

एक बार दो चूहे के बच्चे बाइक पर जा रहे थे... रास्ते में उन्हें शेर का बच्चा मिला... उसने कहा मुझे भी बिठा लो। कुछ सोचने के बाद चूहे ने कहा...देख ले, वरना बाद में तेरी मम्मी बोलेगी गुंडों के साथ घूमता है।

गणित की क्लास चल रही थी, टीचर ने पूछा- बताओ 1000 किलो = एक टन, तो 3000 किलो कितना होगा? पप्पू- जी सर....टन, टन, टन। टीचर को समझ नहीं आ रहा कि शाबासी दूं या क्लास से बाहर निकालूं।

एक लड़की को देखा तो ऐसा...लगा, दूसरी लड़की को देखा तो वैसा...लगा, और जब दोनों ने गाल पर थप्पड़ मारे...तो एक जैसा लगा....

महिला- भैया सही रेट लगाओ ना, हम तो हमेशा आप से ही सामान खरीदते है, दुकानदार- बकवास मत करो, अभी दो दिन ही हुए है दुकान खोली है मैने?

कहानी — गलत आदत

एक बार बादशाह अकबर किसी एक बात को लेकर बहुत परेशान रहने लगे थे। जब दरबारियों ने उनसे पूछा, तो बादशाह बोले कि हमारे शहजादे को अंगूठा चूसने की बुरी आदत पड़ गई है, कई कोशिश के बाद भी हम उनकी यह आदत छुड़ा नहीं पा रहे हैं।'बादशाह अकबर की परेशानी सुनकर किसी दरबारी ने उन्हें एक फकीर के बारे में बताया, जिसके पास हर मर्ज का इलाज था। फिर बादशाह ने उस फकीर को दरबार में आने का निमंत्रण दिया। जब फकीर दरबार में आया, तो बादशाह ने उन्हें अपनी परेशानी के बारे में बताया। फकीर ने बादशाह की पूरी बात सुनकर परेशानी को दूर करने का वादा किया और एक हफ्ते का समय मांगा। जब एक हफ्ते के बाद फकीर दरबार में आया, तो उन्होंने शहजादे को अंगूठा चूसने की बुरी आदत के बारे में प्यार से समझाया और उसके नुकसान भी बताए। फकीर की बातों का शहजादे पर बहुत प्रभाव पड़ा और उसने अंगूठा न चूसने का वादा भी किया। सभी दरबारियों ने यह देखा, तो बादशाह से कहा कि जब यह काम इतना आसान था, तो फकीर ने इतना समय क्यों लिया। आखिर उसने क्यों दरबार का और आपका समय खराब किया।' बादशाह दरबारियों की बातों में आ गए और उन्होंने फकीर को दंड देने की ठान ली। सभी दरबारी बादशाह का समर्थन कर रहे थे, लेकिन बीरबल चुपचाप था। बीरबल को चुपचाप देख, अकबर ने पूछा कि तुम क्यों शांत हो बीरबल?' बीरबल ने कहा कि जहांपनाह गुस्ताखी माफ हो, लेकिन फकीर को सजा देने के स्थान पर उन्हें सम्मानित करना चाहिए और हमें उनसे सीखना चाहिए।' तब बादशाह ने गुस्से में कहा कि तुम हमारे फैसले के खिलाफ जा रहे हो। आखिर तुमने ऐसा सोच भी कैसे। बीरबल ने कहा कि महाराज पिछली बार जब फकीर दरबार में आए थे, तो उन्हें चूना खाने की बुरी आदत थी। आपकी बातों को सुनकर उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ। उन्होंने पहले अपनी इस गंदी आदत को छोड़ने का फैसला लिया फिर शहजादे की गंदी आदत छुड़ाई।'बीरबल की बात सुनकर दरबारियों और बादशाह को अपनी गलती का एहसास हुआ और सभी ने फकीर से क्षमा मांगकर उसे सम्मानित किया।

7 अंतर खोजें

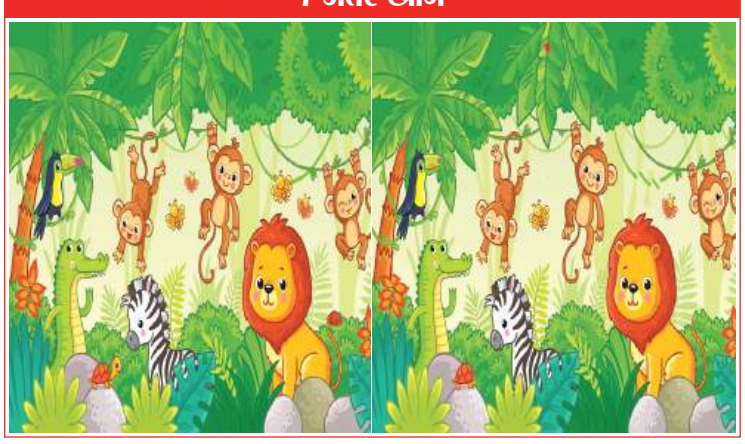

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — कोर्ट-कचहरी में अनुकूलता रहेगी। पूजा-पाठ में मन लगेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। झंझटों में न पड़ें। उधार दिया धन मिलने से राहत हो सकती है। वाहन सावधानी से चलाएं।

वृषभ — चोट, चोरी व विवाद से हानि संभव है। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। कुसंगति से हानि होगी। अपने काम से काम रखें। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न करें।

मिथुन — राजकीय बाधा दूर होकर लाभ होगा। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। क्रोध पर नियंत्रण रखें। लाभ होगा। रुके हुए काम समय पर पूरे होने से आत्मविश्वास बढ़ेगा।

कर्क — भूमि व भवन संबंधी कार्य लाभ देंगे। रोजगार मिलेगा। शत्रु भय रहेगा। निवेश व नौकरी लाभ देंगे। व्यापार अच्छा चलेगा। कार्य के विस्तार की योजनाएँ बनेंगी।

सिंह — रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। पार्टी व पिकनिक का आनंद मिलेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। विवाद न करें। सामाजिक एवं राजकीय ख्याति में अभिवृद्धि होगी।

कन्या — उत्तेजना पर नियंत्रण रखें। शत्रु सक्रिय रहेंगे। शोक समाचार मिल सकता है। थकान महसूस होगी। व्यावसायिक चिंता रहेगी। संतान के व्यवहार से कष्ट होगा।

तुला — रोमांस में समय बीतेगा। मेहनत का फल मिलेगा। कार्यसिद्धि से प्रसन्नता रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा।

वृश्चिक — अतिथियों का आवागमन रहेगा। नई योजनाओं की शुरुआत होगी। उत्साहवर्धक सूचना मिलेगी। भूमि व संपत्ति संबंधी कार्य होंगे। स्वाभिमान बना रहेगा। संतान की प्रगति संभव है।

धनु — बेरोजगारी दूर होगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। भेंट व उपहार की प्राप्ति होगी। जोखिम न लें। क्रोध एवं उत्तेजना पर संयम रखें। सत्कार्य में रुचि बढ़ेगी।

मकर — कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। व्ययवृद्धि होगी। तनाव रहेगा। अपरिचितों पर विश्वास न करें। प्रयास में आलस्य व विलंब नहीं करना चाहिए। विरोधी परास्त होंगे।

कुम्भ — दिन प्रेमभरा गुजरेगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। रुका हुआ धन मिलेगा। प्रसन्नता रहेगी। जल्दबाजी न करें। प्रियजनों से पूरी मदद मिलेगी। धन प्राप्ति के योग हैं।

मीन — नई योजना बनेगी। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। मान-सम्मान मिलेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें। कार्यक्षमता एवं कार्यकुशलता बढ़ेगी।

बॉलीवुड | मन की बात

इश्क विश्क के बाद मैं इंडस्ट्री की पॉलिटिक्स का शिकार हुई : अमृता

अमृता राव हाल ही में अक्षय कुमार-अरशद वारसी की फिल्म 'जॉली एलएलबी 3' में नजर आई हैं। अमृता ने साल 2003 में शाहिद कपूर के साथ फिल्म 'इश्क विश्क' से अपने करियर की शुरुआत की थी। यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर हिट रही थी और अमृता रातोंरात स्टार बन गई थीं। हालांकि, अब अमृता ने बताया कि पहली फिल्म हिट होने के बाद वो इंडस्ट्री की पॉलिटिक्स का शिकार हुईं। एक्ट्रेस ने अपने साथ हुए पुराने घटनाक्रमों को याद किया। यूट्यूबर और कंटेंट क्रिएटर रणवीर अल्लाहबादिया के 'द रणबीर शो' पर अमृता ने करियर के शुरुआती दिनों में हुई राजनीति को याद किया। बातचीत के दौरान एक्ट्रेस ने बताया, 'मुझे याद है जब इश्क विश्क रिलीज हुई थी, तब शाहिद और मैंने फेस ऑफ द ईयर, सुपरस्टार ऑफ टुमॉरो या ऐसा ही कोई अवॉर्ड जीता था। उस मैगजीन के कवर पेज के लिए एक फोटोशूट होना था। मैं अवॉर्ड के साथ बैठी थी। शाहिद मेरे पीछे अवॉर्ड के साथ खड़े थे। दोनों तरफ दो सुपरस्टार अभिनेत्रियां बैठी थीं। एक और बहुत ही मशहूर अभिनेता और एक अभिनेत्री थीं, जो बहुत ही मशहूर थीं। कवर पेज का लेआउट कुछ ऐसा ही था। हम बहुत खुश और रोमांचित थे। मैं सोच रही थी, मेरा पहला कवर यहां आने वाला है। लेकिन जब मैंने कवर देखा तो सब कुछ फोटोशॉप किया हुआ था। मुझे बैकग्राउंड में ले जाया गया था और कोई अन्य फोरग्राउंड में था। इस दौरान अभिनेत्री ने एक और किस्से को याद करते हुए बताया कि जब मैंने इंडस्ट्री में कदम रखा था, तो मुझे बहुत पतली होने के लिए डांटा जाता था। अमृता ने अपनी मौसी की सलाह याद की कि जब वह पतली थीं तो उनका मजाक उड़ाया जाता था, लेकिन जब उनका वजन बढ़ा, तो उसके लिए भी उनका मजाक उड़ाया गया। जब उनका वजन आदर्श था, तब किसी ने उनकी तारीफ नहीं की।

रानी मुखर्जी ने अपने पिता को समर्पित किया नेशनल अवॉर्ड

रानी मुखर्जी को हाल ही में फिल्म मिसेज चटर्जी वर्सेज नॉर्वे के लिए नेशनल अवॉर्ड मिला है। अवॉर्ड मिलने पर उन्होंने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने बुधवार को कहा कि अपने 30 साल के करियर का पहला राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीतना एक भावुक क्षण है। रानी ने यह सम्मान अपने दिवंगत पिता राम मुखर्जी को समर्पित किया। पिता को समर्पित किया सम्मान मंगलवार को 71वें नेशनल फिल्म पुरस्कार समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने रानी मुखर्जी को

मिसेज चटर्जी वर्सेस नॉर्वे में उनके अभिनय के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार प्रदान किया। आशिमा छिब्बर द्वारा निर्देशित यह फिल्म मार्च 2023 में रिलीज हुई। अवॉर्ड मिलने पर रानी ने कहा एक अभिनेत्री के रूप में अपने 30 साल के सफर में पहला राष्ट्रीय पुरस्कार पाकर मैं सचमुच अभिभूत हूं। यह सम्मान मेरे लिए मेरी दुनिया है। मैं इसे अपने दिवंगत पिता को समर्पित करना चाहती हूं, जिन्होंने हमेशा मेरे लिए इस पल का सपना देखा था।

मां से मिली प्रेरणा

47 साल की अभिनेत्री ने बयान में कहा आज मुझे उनकी बहुत याद आ रही है और मैं जानती हूं कि यह उनका आशीर्वाद और मेरी मां की प्रेरणा है, जिसने मुझे श्रीमती चटर्जी की भूमिका निभाने में मार्गदर्शन दिया। उन्होंने अपने प्रशंसकों और मिसेज चटर्जी वर्सेस नॉर्वे के कलाकारों और क्रू के प्रति भी आभार व्यक्त किया। रानी मुखर्जी ने कहा मिसेज चटर्जी बनाम नॉर्वे की पूरी टीम ने इस शक्तिशाली कहानी में अपना दिल लगा दिया। मैं उनमें से प्रत्येक के प्रति बहुत आभारी हूं। मेरे फैंस हर उतार-चढ़ाव में मेरे साथ खड़े रहने के लिए आपका धन्यवाद। आपका अटूट प्यार और समर्थन मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा रही है। मैं जानती हूं कि यह पुरस्कार आप सभी के लिए कितना मायने रखता है। यह देखकर मुझे बहुत खुशी और आनंद मिलता है कि आप कितने खुश हैं।

फिल्म की कहानी

फिल्म मिसेज चटर्जी बनाम नॉर्वे नॉर्वे में रहने वाली एक भारतीय मां देबिका चटर्जी (मुखर्जी) की कहानी है। इसमें दिखाया गया है कि वह अपने बच्चों से जबरन अलग कर दिए जाने के बाद उनकी कस्टडी वापस पाने के लिए अधिकारियों से लड़ती हैं। मुखर्जी अगली बार अपनी अपराध ड्रामा फिल्म मर्दानी 3 में दिखाई देंगी।

दो अक्टूबर को रिलीज होगी रवि तेजा और श्रीलीला की फिल्म मास जथारा

मास जथारा के निर्माता नागा वामसी ने सोशल मीडिया हैंडल पर रवि तेजा और श्रीलीला की आगामी फिल्म मास जथारा की रिलीज को लेकर एक अहम जानकारी शेयर की है। जिससे रवि और श्रीलीला के फैंस के बीच खुशी की लहर दौड़ पड़ी है।

नागा वामसी ने आज एक्स पर फिल्म मास जथारा की रिलीज डेट को लेकर एक खास घोषणा की है। निर्माता नागा वामसी ने आखिरकार मास महाराजा रवि तेजा की बहुप्रतीक्षित फिल्म मास जथारा की रिलीज की तारीख का खुलासा करते हुए एक्स पर लिखा, हम इस दशहरा पर 2 अक्बतूर को रिलीज की तारीख की घोषणा करेंगे... उसके बाद, लगातार अपडेट और प्रमोशन जारी रहेंगे। हमारे

ऊर्जावान मास महाराज को देखने के लिए तैयार हो जाइए। वैसे यह फिल्म पहले मूल रूप से 27 अगस्त, 2025 को रिलीज होने वाली थी। इस फिल्म के निर्माताओं ने सोशल मीडिया पर आधिकारिक तौर पर इसकी तारीख आगे बढ़ाने की घोषणा की थी। अब, नागा वामसी ने फिल्म की रिलीज डेट को लेकर जानकारी देकर फैंस को खुश कर दिया है।

मास जथारा का निर्देशन भानु भोगवरपु ने किया है। इस फिल्म के निर्माता नागा वामसी हैं। इस फिल्म में मास महाराज रवि तेजा और श्रीलीला मुख्य भूमिका में हैं। वैसे श्रीलीला और रवि पहले सुपरहिट एक्शन कॉमेडी फिल्म धमाका में एक साथ काम कर चुके हैं। इस फिल्म का संगीत भीम्स सेसिरेलो ने तैयार किया है। इस एक्शन-ड्रामा फिल्म की सिनेमैटोग्राफी विधु अयन्ना और संपादन नवीन नूली ने किया है।

अजब-गजब | इस गांव में दुर्गा प्रतिमा न रखने की है रोचक कहानी

एक ऐसा गांव, जहां नवरात्रि में नहीं रखते दुर्गा प्रतिमा

छतरपुर। मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में एक ऐसा भी गांव है, जहां शारदीय नवरात्रि में देवी मां की प्रतिमा नहीं रखी जाती है। हालांकि गांव के कुछ लोगों ने एक बार प्रयास किया था लेकिन मूर्ति स्थापना के पहले ही दिन पंडाल जल गया था। दरअसल चंदला तहसील के ग्राम बछौन में मां कालका देवी साक्षात विराजमान हैं, जो दिन में तीन बार रूप बदलती हैं। मंदिर के पुजारी बताते हैं कि मां कालका देवी मंदिर बहुत प्राचीन है। माता का यह मंदिर लगभग 500 साल पुराना है। यहां सभी भक्तों की मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

पुजारी बताते हैं कि मां कालका माता की मूर्ति का चमत्कार यह है कि मूर्ति स्वयं दिन में तीन बार रूप बदलती है। सुबह बाल्यावस्था में मूर्ति का तेज रूप देखने को मिलता है। दोपहर में युवावस्था में मूर्ति का रंग देखने को मिलता है और शाम को मूर्ति वृद्धावस्था में प्रतीत होती है।

पुजारी आगे बताते हैं कि माता के मंदिर की खोज कुशवाहा समाज के एक चरवाहे ने की थी। दरअसल चरवाहा अपने हल के लिए पहाड़ी पर चढ़कर बांस की लकड़ी लेने आया था। जब बांस की लकड़ी काटकर चरवाहा ले गया, तो रात में उसे मां ने स्वप्न दिखाया और कहा, 'मैं कालका माता हूं और जो तुमने बांस काटा है, वहां मेरा स्थान है। अब वहां मेरा

स्थान बनवाओ।' इसके बाद वहां मां कालका मंदिर का निर्माण कराया गया।

पुजारी बताते हैं कि बछौन गांव में कभी भी शारदीय नवरात्रि पर दुर्गा प्रतिमा नहीं रखी जाती है। एक बार गांव के ठाकुर समाज ने दुर्गा प्रतिमा रखी थी और पूरा पंडाल ही जल गया था। इसके बाद मां कालका देवी ने स्वप्न में कहा था, 'मैं साक्षात इस गांव में हूं। यहां मेरे अलावा कोई दूसरी प्रतिमा स्थापित नहीं होगी।' नवरात्रि में यहां लाखों श्रद्धालु मां कालका देवी के दर्शन करने आते हैं।

इस महिला को है अजीब बीमारी, पानी छूते ही जलने लगता है इसका पूरा शरीर

सोशल मीडिया पर कई ऐसी दुर्लभ बीमारियों से जुड़ी खबरें सामने आती हैं, जिन पर यकीन करना मुश्किल हो जाता है। एक ऐसा ही चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जहां एक महिला ने बताया कि उसे पानी से एलर्जी है। जी हां, जिस पानी के बिना जीवन संभव नहीं है, उसी पानी से उसे हर बार रिएक्शन होता है। इंग्लैंड की रहने वाली एरीन कैसिडी नाम की इस महिला ने ब्रिटिश टीवी शो 'दिस मॉर्निंग' पर अपनी आपबीती सुनाई, जिसे सुनकर हर कोई हैरान रह गया। एरीन ने बताया कि जब वह 14 साल की थी तब उसे पहली बार इस समस्या का एहसास हुआ। वह

स्कूल में स्विमिंग करने गई और जब वह बाहर निकली तो उसके सीने पर एक लाल चकत्ता (रैश) बन गया, जिसमें जलन भी हो रही थी। उसे लगा कि यह क्लोरीन की वजह से है, लेकिन बाद में जब भी वह नहाती या पसीना आता तो उसे यही समस्या होने लगी। इसके बाद उसे अहसास हुआ कि पानी को छूते ही उसके तन-बदन में चकत्ते पड़ गए और जलन होने लगी। वो एक दुर्लभ बीमारी की वजह की शिकार थी, जो रुह कंपा देने वाली थी। एरीन ने कहा, 14 साल की उम्र से लेकर अब 24 साल की उम्र तक, पिछले 10 सालों से मैं इससे बहुत बुरी तरह जूझ रही हूं। उन्होंने बताया कि उन्हें अपने ही आंसुओं से भी रिएक्शन होता है, जिससे उनकी त्वचा पर जलन होती है। यह बीमारी इतनी दुर्लभ है कि डॉक्टर्स भी समझ नहीं पाते हैं। एरीन ने बताया कि वह नौ साल तक लगातार डॉक्टरों के पास गईं, लेकिन सभी ने इसे सामान्य रैश कहकर टाल दिया और सिर्फ एंटीहिस्टामाइन लेने की सलाह दी। आखिरकार, नौ साल बाद जब वह एक नए डॉक्टर के पास गईं, तो उन्होंने धैर्य से उसकी सारी तस्वीरें देखीं, पूरी तरह से जांच करने के बाद इस दुर्लभ बीमारी की पुष्टि की। इस बीमारी को एक्वाजेनिक अर्टिकेरिया कहते हैं। यह तब होता है जब त्वचा पानी के संपर्क में आती है, जिससे पित्ती निकल आती हैं। वेबएमडी के अनुसार, ये रैश अक्सर पानी के संपर्क में आने के 20-30 मिनट बाद दिखाई देते हैं और 30-60 मिनट बाद गायब हो जाते हैं। कुछ मामलों में सिरदर्द, सांस लेने में तकलीफ, घरघराहट या बेहोशी जैसे लक्षण भी हो सकते हैं।

बिहार से शुरू होगी भाजपा की उलटी गिनती

कांग्रेस पार्टी की बैठक में एनडीए सरकार पर करारा वार

» विदेश नीति निजी दोस्ती से तय नहीं होनी चाहिए: राहुल

» कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के आत्मसम्मान के साथ कोई समझौता नहीं होगा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। कांग्रेस ने बिहार विधानसभा चुनाव के लिए अपना अभियान तेज करते हुए कथित वोट चोरी, अर्थव्यवस्था, आरक्षण सहित विभिन्न मुद्दों को लेकर भाजपा पर तीखा हमला बोला और कहा कि कुछ सप्ताह बाद बिहार में होने वाले विधानसभा चुनाव से मोदी सरकार के भ्रष्ट शासन के अंत की शुरुआत होगी। पार्टी की विस्तारित कार्य समिति की बैठक में देश के मुख्य विपक्षी दल ने विदेश नीति को लेकर भी मोदी सरकार को कटघरे में खड़ा किया और दावा किया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हग्लोमैसी (गले मिलने की कूटनीति) ने भारत को कूटनीतिक रूप से अलग-थलग कर दिया है।

बिहार प्रदेश कमेटी के मुख्यालय सदाकत आश्रम में चार घंटे से अधिक समय तक चली बैठक में दो प्रस्ताव पारित किए गए जिनमें एक राजनीतिक और दूसरा बिहार से संबंधित है। स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) की बैठक बिहार में हुई है। बिहार में इस साल नवंबर में विधानसभा चुनाव होने की संभावना है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, पार्टी के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल, जयराम रमेश और कई अन्य नेता शामिल हुए। कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी के अस्वस्थ होने के कारण वह और उनकी पुत्री प्रियंका गांधी वाद्रा बैठक में शामिल नहीं हो सकीं। राहुल गांधी ने अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के टैरिफ लगाने और एच1बी वीजा से जुड़े उनके कदमों की पृष्ठभूमि में प्रधानमंत्री मोदी पर निशाना साधा और कहा कि विदेश नीति निजी दोस्ती से तय नहीं होनी चाहिए। राहुल गांधी ने कथित वोट चोरी के विषय का भी उल्लेख किया और कहा कि वह आगे भी तथ्यों के साथ जनता के सामने अपनी बात रखेंगे। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि भाजपा संविधान को खत्म कर रही है। मैंने हाइड्रोजन बम की बात की थी वो आएगा। वो आएगा और फिर आपको भाजपा की सच्चाई, जो इन्होंने पूरे देश में किया है। राहुल ने कहा कि बिहार में 20 साल से नीतीश कुमार की सरकार है, लेकिन उन्होंने अतिपिछड़ा समाज को न्याय दिलाने के लिए फैसले नहीं लिए। हमने अतिपिछड़ा समाज के साथ बैठक की, समाज के लोगों से बात की और अतिपिछड़ा न्याय संकल्प तैयार कर दिया। हमारा वादा है कि सरकार बनते ही अतिपिछड़ा न्याय संकल्प को लागू करेंगे। बैठक के दौरान राहुल गांधी ने कहा कि कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के आत्मसम्मान के साथ कोई समझौता नहीं होगा। उन्होंने यह टिप्पणी ऐसे वक्त की है जब बिहार में महागठबंधन के घटक दलों के बीच सीट बंटवारे को लेकर बातचीत जारी है।

भाजपा संविधान को खत्म कर रही है

दिग्गज नेताओं ने साझा किए विचार

हालांकि, कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने कहा, जब आसमान में सूरज चमक रहा हो तो उसकी घोषणा की आवश्यकता नहीं होती। कांग्रेस महासचिव सचिन पायलट ने कहा कि सभी फैसले सही समय पर होंगे। कार्य समिति की बैठक में कथित वोट चोरी और विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। वेणुगोपाल ने कहा कि वोट चोरी के खिलाफ हस्ताक्षर अभियान शुरू किया गया है और अगले महीने पांच करो? हस्ताक्षर निर्वाचन आयोग को सौंपे जाएंगे। बैठक में पारित प्रस्ताव में आरोप लगाया गया है कि एसआईआर मतदाता सूची में धांधली कर सत्ता पर छलपूर्वक काबिज रहने के भाजपा के टूलकिट का मंसूबा है।

बिहार में महागठबंधन की सरकार बनेगी : रमेश

पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने बैठक के बाद यह दावा भी किया कि तेलंगाना विधानसभा चुनाव से दो महीने पहले कार्य समिति की बैठक हैदराबाद में हुई थी और वहां कांग्रेस की सरकार बनी, उसी तरह अब पटना की बैठक के बाद बिहार में महागठबंधन की सरकार बनेगी। कार्य समिति की बैठक में हालिया प्राकृतिक आपदाओं और गायक जुबिन गर्ग के निधन पर भी दुख जताया गया।

अजेय रहते एशिया कप के फाइनल में पहुंचा भारत

» सुपर-4 के मैच में बांग्लादेश को 41 रन से हराया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

दुबई। भारत ने बांग्लादेश को 41 रन से हरा दिया। दुबई अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम ने अभिषेक शर्मा की अर्धशतकीय पारी के दम पर 20 ओवर में छह विकेट पर 168 रन बनाए। जवाब में बांग्लादेश की टीम 19.3 ओवर में सिर्फ 127 रन ही बना पाई। उनके लिए सैफ हसन ने सर्वाधिक 69 रन बनाए। वहीं, भारत के लिए कुलदीप यादव ने तीन विकेट लिए जबकि जसप्रीत बुमराह और वरुण चक्रवर्ती ने दो-दो विकेट झटके। इसके अलावा अक्षर पटेल और तिलक वर्मा ने एक-एक सफलता हासिल की। भारत ने अजेय रहते हुए एशिया कप के फाइनल में प्रवेश कर लिया।

अभिषेक ने ली बांग्लादेशी गेंदबाजों की जमकर क्लास

अभिषेक शर्मा ने 37 गेंद में 75 रन की पारी खेलकर बांग्लादेश के गेंदबाजों की जमकर क्लास ली। हालांकि, वह अपनी इस पारी को शतक में तब्दील नहीं कर सके। उन्हें शॉर्ट थर्ड मैन पर खड़े रिशाद हुसैन ने रनआउट कर दिया। वहीं दूसरे छोर पर भारतीय बल्लेबाजों ने कुछ खराब शॉट खेले जिसमें शुभमन गिल, तिलक वर्मा और कप्तान सूर्यकुमार यादव शामिल रहे। वहीं भारतीय गेंदबाजों के सामने बांग्लादेश की पारी लड़खड़ा गई। सैफ हसन ने जरूर दमदार खेल दिखाया। कई बार किस्मत ने भी उनका साथ दिया, क्योंकि उन्हें पांच बार जीवनदान मिला। हालांकि, अन्य बल्लेबाजों में से कोई भी दहाई का आंकड़ा पार नहीं कर सका। सैफ हसन ने अकेले दम पर भारतीय गेंदबाजों को चुनौती देने की कोशिश की, लेकिन दूसरे छोर से उन्हें कोई साथ नहीं मिला।

करो या मरो के मैच में उतरेंगे बांग्लादेश-पाकिस्तान

सुपर-4 की अंक तालिका में भारत चार अंक और 1.357 के नेट रन रेट के साथ शीर्ष पर है। वहीं, पाकिस्तान और बांग्लादेश क्रमशः दूसरे और तीसरे पायदान पर है। दोनों टीमों के बीच गुरुवार को वर्चुअल नॉकआउट मुकाबला खेला जाएगा, जो भी टीम इस मैच में जीत दर्ज करेगी वह 28 सितंबर को भारत के साथ फाइनल खेलेगी। चौथे पायदान पर श्रीलंका है, जिनको उनके सुपर-4 के दोनों मुकाबलों में शिकस्त मिली थी।

हमें पाक के साथ खेलना नहीं चाहिए था: थरूर

» कांग्रेस सांसद बोले - खेला तो हमें पाकिस्तानी खिलाड़ियों से हाथ मिलाना चाहिए था

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोच्चि। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने एशिया कप के दौरान भारतीय क्रिकेटरों की तरफ पाकिस्तानी क्रिकेटरों से हाथ मिलाने से इनकार करने और पाकिस्तानी क्रिकेटरों की तरफ से मैदान पर किए गए हाव-भाव पर कहा, कि मुझे व्यक्तिगत रूप से लगता है कि एक बार खेलने का फैसला हो जाने के बाद, अगर हम पाकिस्तान के बारे में इतनी ही दृढ़ता से सोचते हैं तो हमें नहीं खेलना चाहिए था, लेकिन अगर हम उनके साथ खेलने जा रहे हैं तो हमें खेल की भावना से खेलना चाहिए और हमें उनसे हाथ मिलाना चाहिए था।

कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने कहा, हमने 1999 में पहले भी ऐसा किया है, जब कारगिल युद्ध चल रहा था, जिस दिन हमारे सैनिक हमारे देश के लिए मर रहे थे। हम इंग्लैंड में पाकिस्तान के खिलाफ विश्वकप खेल रहे थे, हम तब भी उनसे हाथ मिला रहे थे, क्योंकि खेल की भावना देशों के बीच, सेनाओं के बीच होने वाली भावना से अलग होती है। यह मेरा विचार है। अगर पाकिस्तानी टीम, पहली बार अपमानित होने के बाद, दूसरी बार हमें अपमानित करने का फैसला करती है तो यह दर्शाता है कि दोनों तरफ खेल की भावना का अभाव है। एशिया कप के दौरान भारत और पाकिस्तान के बीच खेले गए मुकाबले में हाथ न मिलने से लेकर और भी कई तरह के विवाद सामने आए, जिसमें पाकिस्तानी क्रिकेटरों की तरफ से फाइटर जेट से जुड़ा एक्शन शामिल है, जो काफी विवादों में घिरा हुआ है. एशिया कप के दौरान भारत और पाकिस्तान के बीच खेले गए मुकाबले में बैट से गन वाला पोज भी विवादों के घेरे में है। यह मुद्दा केवल खेल तक सीमित नहीं रहा, बल्कि राजनीतिक बहस का हिस्सा बन गया।

2012 से बंद है दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय क्रिकेट सीरीज

भारत और पाकिस्तान के बीच क्रिकेट हमेशा से ही राजनीतिक और भावनात्मक मुद्दा रहा है। दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय क्रि केट सीरीज 2012 से बंद है और मुकाबले सिर्फ आईसीसी टूर्नामेंट या एशिया कप जैसे आयोजनों में होते हैं।

जजों की नियुक्ति को लेकर सुप्रीम कोर्ट बार असोसिएशन ने सीजेआई को लिखा पत्र

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारत की न्यायपालिका में नियुक्तियों को लेकर एक बार फिर बड़ा विवाद खड़ा हो गया है। सुप्रीम कोर्ट बार असोसिएशन ने सीजेआई बी.आर. गवई और कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल को पत्र लिखकर नियुक्तियों के लिए न्यायपालिका में ज्ञापन को प्रक्रिया अंतिम रूप देने और सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट में जजों की नियुक्ति के लिए पारदर्शी, न्यायसंगत और योग्यता-आधारित ढांचा तैयार करने की मांग की है।

अध्यक्ष और वरिष्ठ अधिवक्ता विकास सिंह ने 12 सितंबर को सीजेआई और मेघवाल को पत्र लिखते हुए मौजूदा कलीजियम प्रणाली की संरचनात्मक खामियों को उजागर किया और कहा कि सुधारों में हो रही देरी न्यायपालिका की निष्पक्षता और जनता के विश्वास दोनों को कमजोर कर रही है।

सत्ता में बैठे लोगों को संवाद पर भरोसा नहीं : शरद पवार

» राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एसपी) का केंद्र पर निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एसपी) प्रमुख शरद पवार ने केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए सवाल उठाया है कि क्या सत्ता में बैठे लोग अब भी संवाद में विश्वास रखते हैं। पुणे में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा, यह देश चुनौतियों और कई समस्याओं के बावजूद एकजुट रहा है और इसे बनाए रखने में संविधान की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा, पड़ोसी देशों जैसे पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका की स्थिति देखिए, वहां हालात बदल गए हैं।

इन सबके बीच भारत आगे बढ़ रहा है और इसका श्रेय संविधान और बाबासाहेब को जाता है। पवार ने कहा, भारतीय संसद वह स्थान है जहां सभी दलों के प्रतिनिधियों के बीच संवाद के माध्यम से महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाते हैं लेकिन आज इस बात को लेकर संदेह की स्थिति बन गई है कि क्या सत्ता में बैठे लोगों को अब भी संवाद पर भरोसा है।

हिंदू उत्तराधिकार कानून पर सावधानी से बढ़ेंगे आगे : सुप्रीम कोर्ट

» धाराओं को चुनौती देने वाली याचिकाएं बड़ी अदालत पहुंचीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने हिंदू उत्तराधिकार कानून की कुछ धाराओं को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर विचार करते हुए कहा कि वह इस मामले में सावधानी से आगे बढ़ेगा। कोर्ट ने हिंदू सामाजिक ढांचे को टूटने से बचाने की बात कही, लेकिन साथ ही महिलाओं के अधिकारों को लेकर संतुलन बनाए रखने पर भी जोर दिया। मामला विशेष रूप से अधिनियम की धारा 15 और 16 से जुड़ा है।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वह हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956 की कुछ धाराओं को लेकर दायर याचिका पर विचार करते समय बहुत ही सावधानी से आगे बढ़ेगा। शीर्ष कोर्ट ने यह भी कहा कि वह हजारों वर्षों पुरानी हिंदू सामाजिक संरचना और उसके मूल सिद्धांतों को तोड़ने से बचेगा। जस्टिस बी.वी. नागरत्ना और जस्टिस आर. महादेवन की बेंच इस अधिनियम के तहत उत्तराधिकार से जुड़ी कुछ धाराओं को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई कर रही थी। सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने कहा, हमें हिंदू समाज की उस संरचना को नीचा नहीं दिखाना चाहिए, जो पहले मौजूद है। एक अदालत के रूप में हम आपको सावधान कर रहे हैं।

हिंदुओं की सामाजिक संरचना है और उसे गिराने की कोशिश न करें। हम ऐसा कोई फैसला नहीं देना चाहते, जिससे हजारों वर्षों से चली रही व्यवस्था टूट जाए। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि महिलाओं के अधिकार जरूरी हैं, लेकिन सामाजिक ढांचे और महिलाओं को अधिकार देने के बीच एक संतुलन बनाए रखना भी उतना ही जरूरी है। बेंच ने इस मुद्दे के व्यापक समाधान से पहले पक्षकारों को सुप्रीम कोर्ट के मध्यस्थता केंद्र में भेज दिया है, ताकि वे आपसी समझौते की संभावना तलाश सकें। इस मामले में कोर्ट के समक्ष विचाराधीन मुख्य मुद्दा हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम की धारा 15 और 16 है। ये धाराएं उस स्थिति से जुड़ी हैं जब किसी हिंदू महिला की बिना वसीयत के मृत्यु हो जाती है, यानी उसने कोई वसीयत नहीं छोड़ी होती है। धारा 15 के अनुसार, अगर किसी हिंदू महिला की मृत्यु वसीयत छोड़े बिना होती है, तो उसकी संपत्ति सबसे पहले उसके पति के उत्तराधिकारियों को मिलती है, उसके अपने माता-पिता को नहीं।

परंपराओं के नाम पर महिलाओं को समान संपत्ति अधिकारों से वंचित नहीं किया जा सकता : सिब्बल

वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल याचिकाकर्ताओं में से एक की ओर से पेश हुए। उन्होंने दलील दी कि जिन धाराओं को चुनौती दी गई है, वे महिलाओं के खिलाफ भेदभावपूर्ण और उन्हें अलग करने वाली हैं। उन्होंने कहा कि परंपराओं के नाम पर महिलाओं को समान संपत्ति अधिकारों से वंचित नहीं किया जा सकता।

याचिकाकर्ता इस कानून की आड़ में सामाजिक ढांचे को तोड़ना चाहते है : एम. नटराज

वहीं, केंद्र सरकार की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल के एम. नटराज ने अधिनियम का बचाव किया और कहा कि यह कानून अच्छी तरह से तैयार किया गया है। उन्होंने आरोप लगाया कि याचिकाकर्ता इस कानून की आड़ में सामाजिक ढांचे को तोड़ना चाहते हैं।

मोदी सरकार ने मानवता-नैतिकता का परित्याग किया : सोनिया गांधी

» फिलस्तीन पर चुप्पी पर कांग्रेस सांसद का भाजपा पर तीखा हमला

» कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष ने अंग्रेजी दैनिक के लिए लिखे लेख

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी ने एकबार फिर बृहस्पतिवार को फलस्तीन के मुद्दे पर केंद्र सरकार के रुख की कड़ी आलोचना की है। राज्य सभा सांसद ने कहा कि अब भारत को नेतृत्व का परिचय देना चाहिए। उन्होंने यह आरोप भी लगाया कि इस मुद्दे पर सरकार की प्रतिक्रि या और 'गहरी चुप्पी' मानवता एवं नैतिकता, दोनों का परित्याग है।

फ्रांस, यूनाइटेड किंगडम, कनाडा, पुर्तगाल और ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर फि लिस्तीनी राज्य को मान्यता दे चुका है- जो लंबे समय से पीड़ित फिलिस्तीनी लोगों की वैध आकांक्षाओं की पूर्ति की दिशा में पहला कदम है। संयुक्त राष्ट्र के 193 सदस्य देशों में से 150 से ज्यादा देशों ने अब ऐसा कर दिया है। भारत इस मामले में अग्रणी रहा है, जिसने फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन (पीएलओ) को वर्षों के समर्थन के बाद, 18 नवंबर, 1988 को औपचारिक रूप से फिलिस्तीनी राज्य को मान्यता दी थी। भारत का यह निर्णय मूलत: नैतिक था और हमारे विश्वदृष्टिकोण के अनुरूप था। हाल ही में हुए हमलों के लेकर विपक्ष ने भारत सरकार को घेरा है। कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी ने बृहस्पतिवार को फलस्तीन के मुद्दे पर केंद्र सरकार के रुख की आलोचना करते हुए कहा कि अब भारत को नेतृत्व का परिचय देना चाहिए। उन्होंने यह आरोप भी लगाया कि इस मुद्दे पर सरकार की प्रतिक्रिया और 'गहरी चुप्पी' मानवता एवं नैतिकता, दोनों का परित्याग है।

व्यक्तिगत कूटनीति की शैली कभी भी स्वीकार्य नहीं

कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष ने अंग्रेजी दैनिक 'द हिंदू' के लिए लिखे लेख में कहा कि सरकार के कदम मुख्य रूप से भारत के संवैधानिक मूल्यों या उसके सामरिक हितों के बजाय इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की व्यक्तिगत मित्रता से प्रेरित प्रतीत होते हैं। सोनिया गांधी ने कहा, 'व्यक्तिगत कूटनीति की यह शैली कभी भी स्वीकार्य नहीं है और यह भारत की विदेश नीति का मार्गदर्शक नहीं हो सकती। दुनिया के अन्य हिस्सों में-खासकर अमेरिका में ऐसा करने के प्रयास हाल के महीनों में सबसे दुखद और अपमानजनक तरीके से विफल हुए हैं।' सोनिया गांधी ने इजराइल-फलस्तीन संघर्ष पर पिछले कुछ महीनों में तीसरी बार लेख लिखा है, जिनमें उन्होंने हर बार इस मुद्दे पर मोदी सरकार के रुख की तीखी आलोचना की है। सोनिया गांधी ने लेख में कहा कि फ्रांस, फलस्तीनी राष्ट्र को मान्यता देने में ब्रिटेन, कनाडा, पुर्तगाल और ऑस्ट्रेलिया के साथ शामिल हो गया है।

न्याय, पहचान, सम्मान और मानवाधिकारों की लड़ाई अवश्यक

उन्होंने बताया कि 1971 में भारत ने तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान में नरसंहार को रोकने के लिए दृढ़ता से हस्तक्षेप किया, जिससे आधुनिक बांग्लादेश का जन्म हुआ। कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष ने कहा कि इजराइल-फिलस्तीन के महत्वपूर्ण और संवेदनशील मुद्दे पर भी, भारत ने लंबे समय से एक संवेदनशील, लेकिन सैद्धांतिक रुख अपनाया है और शांति एवं मानवाधिकारों की रक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता पर जोर दिया है। सोनिया गांधी ने कहा कि भारत को फलस्तीन के मुद्दे पर नेतृत्व दिखाने की जरूरत है, जो अब न्याय, पहचान, सम्मान और मानवाधिकारों की लड़ाई है।

हिंदुस्तान की हुकूमत यहां चिंगारी न भड़काए : फारूक

» बोले- अब जाग जाना चाहिए, नहीं तो बहुत देर हो जाएगी

» लद्दाख हिंसा के साथ आए नेशनल कॉन्फ्रेंस प्रमुख

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। लद्दाख के लेह में भड़की हिंसा पर नेशनल कॉन्फ्रेंस के प्रमुख फारूक अब्दुल्ला का बड़ा बयान आया है। फारूक अब्दुल्ला ने लद्दाख हिंसा का समर्थन किया। उन्होंने कहा, लद्दाख के लोग अपनी स्टेटहुड के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं। पहले उन्होंने अपनी बात शांति से रखी थी लेकिन जब उनसे किये हुए कोई भी वादे नहीं किए गए तब उन्होंने गांधी का रास्ता छोड़कर आंदोलन का रास्ता चुना।

फारूक अब्दुल्ला ने आगे कहा,लेह में लोगों ने बीजेपी के दफ्तर में आग लगा दी पुलिस की गाड़ियों में आग लगा दी। मैं हिंदुस्तान की हुकूमत से कहूंगा की हमारा स्टेट चीन और पाकिस्तान के बॉर्डर से लगता है। आप यहां चिंगारी ना भड़काइए। आप इंतजार मत करिए कि यहां दोबारा से चिंगारी लग जाए और यह राज्य दोबारा जल जाए। एनसी प्रमुख फारूक अब्दुल्ला ने लद्दाख हिंसा को लेकर कहा, कुछ लोग यह कह रहे हैं कि यहां विदेशी ताकतों की वजह से हिंसा हो रही है। मैं बता देना चाहता हूं कि ऐसा कुछ नहीं है। यह यहां की जनता की आवाज है। जो हमारे राज्य के साथ गलत कर रहे हैं, उनको लद्दाख से सीखना होगा।

उन्होंने आगे कहा, लद्दाख में जो हो रहा है हम उन सभी बच्चों के साथ है। लद्दाख में जो कुछ हो रहा है वह दिल्ली में बैठे हुए नेताओं की वजह से हो रहा है, उनको जाग जाना चाहिए, नहीं तो बहुत देर हो जाएगी। जब फारूक अब्दुल्ला से यह सवाल किया गया कि क्या चीन ने भारत की जमीन कब्जा की है? जवाब में एनसी प्रमुख ने कहा, अगर कब्जा नहीं की है तो बीजेपी वाले क्यों कहते हैं कि हमें वापस लेनी है? हम वहां पैट्रोलिंग भी नहीं कर पा रहे हैं।

माओवादियों से हुई मुठभेड़ की जांच अब करेगी एनआईए

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। एनआईए ने केरल के कन्नूनरक जिले के उरुप्पुमकुट्टी जंगल में 13 नवंबर 2023 को पुलिस और माओवादियों के बीच हुई मुठभेड़ की जांच अपने हाथ में ली है। एनआईए ने हाल ही में इस मामले में फिर से प्राथमिकी दर्ज की है, जिसे कोच्चि स्थित एनआईए कोर्ट में पेश किया गया। सूत्रों ने गुरुवार को यह जानकारी दी।

जांच के तहत एनआईए अब केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु में गिरफ्तार या आत्मसमर्पण कर चुके माओवादियों से पूछताछ करने की तैयारी कर रही है। यह मुठभेड़ उस समय हुई थी, जब केरल पुलिस ने की माओवादी विरोधी कमांडो इकाई थंडरबोल्ट कन्नून के करिकोट्टाकारी थाना क्षेत्र के तहत आने वाले नजेट्टिथोडु इलाके में जंगल में तलाशी अभियान चला रही थी। प्राथमिकी के मुताबिक, प्रतिबंधित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के आठ हथियारबंद अवैध रूप से जंगल में इकट्ठा हुए थे और उन्होंने पर पुलिस पर जानलेवा हमला किया।

पटना बनेगी देश की पहली सनातनी राजधानी!

बिहार विधानसभा चुनाव में ट्विस्ट सनातनी राजनीति का शंखनाद, शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद लड़ेंगे सभी सीटों पर चुनाव

» औवेसी शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद आमने-सामने

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। भारत की राजनीति में बिहार हमेशा से एक प्रयोगशाला रहा है। यहाँ से उठे आंदोलन कभी दिल्ली की सत्ता को हिला देते हैं तो कभी देश की नई राजनीतिक दिशा तय कर देते हैं। इस बार भी बिहार विधानसभा चुनाव एक नए मोड़ पर खड़ा है।

राजनीतिक दलों की पारंपरिक रणनीतियों के बीच अब सनातनी राजनीति का शंखनाद सुनाई दे रहा है। और यही कारण है कि पटना को देश की पहली सनातनी राजधानी बनाने की चर्चा जोरों पर है। जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी ने बिहार में सनातनी राजनीति का शंखनाद कर दिया है। उन्होंने कहा की बिहार में सभी विधानसभा क्षेत्रों से प्रत्याशी चुनाव लड़ेंगे और वे गौ भक्त होंगे। इस मौके पर स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती महाराज जी ने कहा कि सनातन धर्म की रक्षा तभी संभव है जब हम गौ माता का संरक्षण करेंगे। उन्होंने कहा कि गौ रक्षा हमारी आस्था का विषय ही नहीं, बल्कि यह हमारे समाज और संस्कृति की भी आधारशिला है। उन्होंने सभी लोगों से आग्रह किया कि आगामी विधानसभा चुनाव में केवल उन्हीं प्रत्याशियों को वोट दें, जो गौ रक्षा को लेकर स्पष्ट और दृढ़ संकल्पित हों।

मुख्य चुनाव आयुक्त बिहार का दौरा करेंगे

सूत्रों ने पुष्टि की है कि स्थानांतरण-पोस्टिंग की प्रक्रिया पूरी होने के बाद, मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) चुनाव की तैयारियों की समीक्षा के लिए बिहार का दौरा करेंगे। इस दौरे से चुनाव कार्यक्रम की आधिकारिक घोषणा का मार्ग प्रशस्त होने की उम्मीद है।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार : सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार : संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट : हसन जैदी, दूरभाष : 0522- 4078371 | Email : daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।